ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष
पूर्णिमा

अंक – द्वितीय
वर्ष – जून 2026

अभ्युदय

राजभाषा प्रकोष्ठ,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), वाराणसी

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नाऽपुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम् ।।

भारतरत्न पं० मदन मोहन मालवीय जी
संस्थापक

संस्थान दिवस

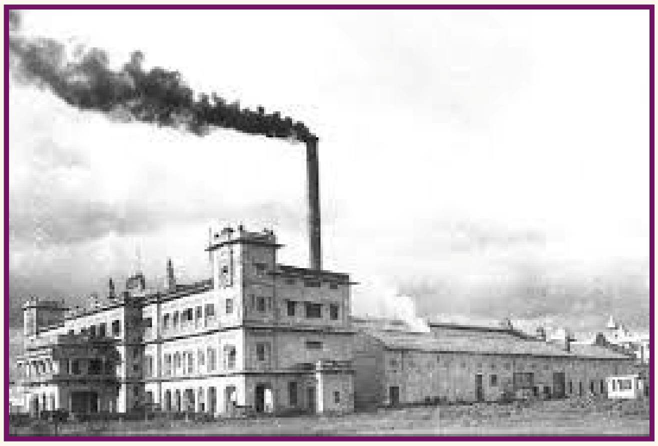

संस्थान अपना शताब्दी वर्ष 2019 में पूरा कर एक नवीन उत्साह के साथ एवं उत्कृष्ट शैक्षणिक व अनुसंधान के माध्यम से राष्ट्र के नव निर्माण हेतु निरंतर कार्यरत है । भारत में अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी में स्नातकीय और परास्नातकीय शिक्षा को शुरू करने एवं विस्तार देने का श्रेय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक, प्रखर शिक्षाविद् और हम सभी के आदर्श पुरुष महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी को जाता है । इसी क्रम में वर्ष 1919 में भारतीय युवाओं को अभियांत्रिकी की शिक्षा देने के लिये बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज (बेन्कों) की स्थापना हुई, तदोपरांत वर्ष 1923 में कॉलेज ऑफ माइनिंग एंड मेटलर्जी (मिनमैट) एवं वर्ष 1939 में कॉलेज ऑफ टेक्नोलाजी (टेक्नों) की स्थापना हुई ।

विकास के पथ पर आगे चलकर वर्ष 1968 में तीनों कालेजों के एकीकरण से प्रौद्योगिकी संस्थान- काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बना, जिसने लगभग 40 वर्षों तक अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में राष्ट्र को निपुण और कुशल विद्यार्थियों की अतुलनीय संपदा से अभिसिंचित किया । यह संस्थान संसद के प्रौद्योगिकी संस्थान अधिनियम द्वारा 29 जून, 2012 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिंदू विश्वविद्यालय) वाराणसी में परिवर्तित कर दिया गया । वर्तमान में यह भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान परिषद की समस्त प्रक्रियाओं को लागू कर विकास के पथ पर निरंतर अग्रसर है ।

29 जून 2012 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का.हि.वि.) वाराणसी में परिवर्तित होने के कारण 29 जून 2026 को 'संस्थान दिवस' के रूप में मनाया जा रहा है।

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक
आचार्य अमित पात्रा, निदेशक
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का. हि. वि.), वाराणसी ।

संपादक
आचार्य अनिल कुमार त्रिपाठी
संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग

संपादक मण्डल
आचार्य सुशांत कुमार श्रीवास्तव
भैषजकीय अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी विभाग

आचार्य अनिता मोहन
भौतिकी विभाग

डॉ. नवीन उपाध्याय
(उप पुस्तकालयाध्यक्ष)

डॉ. अमित कुमार सिंह
उप कुलसचिव (राजभाषा)

श्री शशांक पाठक (संयोजक)
राजभाषा प्रकोष्ठ

छात्र समिति
सूर्यांश सिंह
शाश्वत कुमार झा
मनस्वी यादव
अभिनंदन रौशन

संपर्क
संयोजक (पत्रिका)
राजभाषा प्रकोष्ठ
प्रथम तल
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का. हि. वि.), वाराणसी ।
rajbhasha@iitbhu.ac.in
7309759238

अनुक्रमणिका

निदेशक महोदय का सन्देश .... ङ

संपादक की कलम से .... च

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1.	स्मार्ट ग्रिड, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और उत्तरदायित्व का प्रश्न	आचार्य राकेश कुमार मिश्र	1
2.	पाविया विश्वविद्यालय का इतिहास	डॉ. सोमक भट्टाचार्य	4
3.	ओह अश्लि! (कहानी)	आचार्य कमलेश कुमार सिंह	8
4.	स्थापना दिवस कार्यक्रम (वसंत पंचमी)	छायाचित्र	11
5.	आगमन (कहानी)	सृष्टि स्वरूपा	12
6.	क्या भाषा जरूरी है?	रितेश रंजन सिन्हा	14
7.	संघर्ष, श्रद्धा और मानवता की मिसाल की कहानी	सोमदेव केशरी	16
8.	सन्नाटे के बीच आवाज (कहानी)	पारूल	18
9.	हिंदी भाषा (कविता)	जी जगन मोहन	20
10.	लौटना कितना सुखमय होता है (कविता) जब मैं उठूँगा (कविता)	उज्जवल प्रकाश	21-22
11.	मेरी तमन्ना (कविता)	जीशान अहमद	23
12.	विदाई काशी सी (कविता)	वात्सल्य रघुवंशी	24
13.	हौसलों की उड़ान (कविता)	विजय मचंकराव शिंदे	25
14.	नफ़रत (कविता)	आशुतोष कुमार	25
15.	परिवर्तन (कविता)	रोहित पासवान	26
16.	गीत	नितिन राय	27-29
17.	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (निबंध)	सिद्धार्थ श्रीवास्तव	30
18.	काशी (कविता)	गुंजित जैन	32
19.	आज का युग और युवा पीढ़ी की सोच (निबंध)	जीशान अहमद	35
20.	काशी का माहात्म्य	शशांक पाठक (संयोजक)	36
21.	दो दिवसीय तकनीकी हिंदी कार्यशाला	राजभाषा प्रकोष्ठ	38

क्र. सं.	शीर्षक	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
23.	कवि सम्मेलन	छायाचित्र	41
24.	एक न्यायाधीश के रूप में एलएलएम	जसविंदर सिंह	42
25.	ओपन साइंस में भारत की लंबी छलांग	डॉ. नवीन उपाध्याय	44
26.	राजभाषा हिंदी में कामकाज के संवैधानिक दायित्व	राजभाषा प्रकोष्ठ	46

निदेशक महोदय का संदेश

आचार्य अमित पात्रा
निदेशक
सह अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का.हि.वि.), वाराणसी

यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अभ्युदय' के प्रथम अंक का प्रकाशनोद्घाटन वसंत पंचमी के दिन 'स्थापना दिवस' के सुअवसर पर हुआ था। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था, जिसमें स्वामी विवेकानंद जी के जीवन पर आधारित प्रकरण का जीवंत नाट्य मंचन हुआ था। आगे यह बताते हुए पुनः बड़े हर्ष की अनुभूति हो रही है कि अभ्युदय के द्वितीय अंक का प्रकाशन **29 जून, 2026** को 'संस्थान दिवस' के उपलक्ष्य में होने जा रहा है। इस पत्रिका में संस्थान के शिक्षकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारी बंधुओं के वैज्ञानिक व तकनीकी लेख, कविताएं, कहानी, तथा विविध कार्यक्रम व गतिविधियां इत्यादि सम्मिलित हैं। अतः हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को शामिल करते हुए विभिन्न भारतीय भाषाओं के संवर्धन की दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं ।

इस पत्रिका में बड़े सुंदर व मनमोहक रचनाएँ देखने को मिलते हैं जोकि पाठक वर्ग के लिए अत्यंत रुचिकर होगी। संस्थान के आदर्श वाक्य "योगः कर्मसु कौशलम्" को आत्मसात करते हुए अपने कार्यों को पूर्ण मनोयोग से करते रहना ही हमारा कौशल है। इसी निष्ठा और लगन से पत्रिका में साहित्य सुंदर भाव से लबरेज होकर प्रकाशित किए जा रहे हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि आगामी अंकों में और बेहतर तकनीकी व वैज्ञानिक लेख तथा साहित्य पढ़ने को मिलेंगे तथा भविष्य में अन्य विषय विद्वानों से भी तथ्यपरक एवं शोधपरक आलेख आमंत्रित किये जाएंगे ।

मैं संस्थान परिवार को पत्रिका में अपना लेख इत्यादि देने तथा पत्रिका दल के सभी सदस्यों के अथक प्रयास की प्रशंसा करता हूँ । 'अभ्युदय' पत्रिका के प्रथम अंक को अन्य संस्थानों से भी बहुत सराहना प्राप्त हुई है । मैं ''अभ्युदय'' के आगामी अंकों के लिए भी हृदय से अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका अपने उत्कृष्ट कार्य को अनवरत जारी रखेगी । अभ्युदय पत्रिका के द्वितीय अंक के प्रकाशन कार्य के लिए संस्थान परिवार को एक बार पुनः हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ ।

अमित पात्रा

(आचार्य अमित पात्रा)
दिनांक : 08 जून 2026

संपादकीय

आचार्य अनिल कुमार त्रिपाठी
संपादक, 'अभ्युदय' (पत्रिका)

संस्थान की राजभाषा एकांश के अथक प्रयासों से 'अभ्युदय' पत्रिका के सर्वप्रथम संस्करण का सफल प्रकाशन, मुद्रण तथा उत्सवपूर्ण लोकार्पण बसंत पंचमी के अवसर पर दिनांक 23 जनवरी, 2026 को सम्पन्न हुआ, इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य अजीत कुमार चतुर्वेदी, कार्यक्रम के संरक्षक निदेशक महोदय आचार्य अमित पात्रा तथा अतिथि के रूप में सुबह–ए–बनारस के श्री प्रमोद कुमार मिश्रा, कार्यक्रम अध्यक्ष आचार्य राजेश कुमार एवं साहित्यकार श्री व्योमेश शुक्ल की गरिमामयी उपस्थिति रही ।

बसंत पंचमी के उत्सव के पश्चात राजभाषा एकांश की बैठकों में पत्रिका के प्रतिवर्ष दो संस्करण प्रकाशित करने की योजना बनी और इस दिशा में कार्य प्रारम्भ हुआ । इस वर्ष का द्वितीय संस्करण संस्थान दिवस के अवसर पर 29 जून, 2026 को अनावृत्त होना है ।

सभी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों की प्रवेश परीक्षा से ही पिछले लगभग पचास वर्षों से उत्कृष्ट अभियांत्रिकी शिक्षा तथा तत्संबंधित विज्ञान एवं शोध कार्यक्रमों में संलग्न, भारत रत्न महामना मालवीय द्वारा स्थापित इस संस्थान को Institute of Technology (Amendment) Act के पश्चात अधिसूचना (Gazette Notification) द्वारा राष्ट्रीय महत्त्व के भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) के रूप में 29 जून, 2012 को पुनर्प्रतिष्ठित किया गया । इसी महत्त्वपूर्ण तिथि के स्मरणार्थ इस वर्ष से 29 जून को संस्थान दिवस के रूप में आयोजित किया जा रहा है।

'अभ्युदय' के इस द्वितीय अंक में भारतीय भाषाओं में रचित लेख, कविताएँ एवं कहानियाँ उनके मूल रूप के साथ–साथ हिन्दी रूपांतरण सहित प्रस्तुत की जा रही हैं। राजभाषा हिन्दी की रचनाओं के साथ भारतीय भाषा–समूह की साहित्यिक अभिव्यक्तियों को स्थान देना हमारा संकल्प है। भारतीय भाषाओं तथा हमारी राजभाषा हिन्दी की अभिवृद्धि ही हमारा ध्येय है।

पत्रिका के प्रकाशन तथा इसकी उत्कृष्टता हेतु किए गए सभी सद्प्रयासों में ऊर्जा का संचार हमारे निदेशक प्रोफेसर अमित पात्रा की निरंतर प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से ही सम्भव हो सका है ।

सम्पादक मंडल के सदस्यों तथा विद्यार्थी सम्पादन समूह द्वारा किया गया अथक प्रयास अत्यंत स्तुत्य है। इस सम्पूर्ण कार्य में हिन्दी अनुवादक श्री शशांक पाठक जी का नियोजन, समर्पण एवं श्रम सदैव स्मरणीय रहेगा ।

'अभ्युदय' के इस संस्थान–दिवस विशेष द्वितीय अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। मैं सभी योगदानकर्ताओं के प्रति हार्दिक साधुवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ ।

दिनांक : 08 जून 2026

स्मार्टग्रिड, कृत्रिमबुद्धिमत्ता और उत्तरदायित्व का प्रश्न

प्रो. आर.के. मिश्र
डॉ. मोनिका मिश्रा

विद्युत शक्ति प्रणाली आधुनिक सभ्यता की आधारशिला है। हमारे दैनिक जीवन से लेकर उद्योग, परिवहन, स्वास्थ्य सेवाओं और संचार तक, हर क्षेत्र इसकी निरंतर उपलब्धता पर निर्भर करता है। बीते कुछ दशकों में विद्युत ग्रिड का स्वरूप तेजी से परिवर्तित हुआ है। वर्तमान समय में ऊर्जा संक्रमण (Energy Transition), जलवायु परिवर्तन और नवीकरणीय ऊर्जा के बढ़ते उपयोग ने विद्युत प्रणाली को और अधिक गतिशील तथा अनिश्चित बना दिया है। सौर और पवन ऊर्जा जैसे स्रोतों की अनियमित प्रकृति के कारण ग्रिड संचालन अब केवल आपूर्ति और मांग के संतुलन तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इसमें वास्तविक समय (real & time) में त्वरित निर्णय लेने की आवश्यकता बढ़ गई है। पारंपरिक, केंद्रीकृत और अपेक्षाकृत पूर्वानुमेय ग्रिड अब एक जटिल, परस्पर जुड़े हुए और डेटा–आधारित "स्मार्ट ग्रिड" में बदल रहे हैं। ऐसे परिवेश में पारंपरिक नियंत्रण विधियाँ अपर्याप्त सिद्ध हो रही हैं और यही वह बिंदु है जहाँ स्मार्ट ग्रिड और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अर्थात् आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

स्मार्ट ग्रिड केवल डिजिटल तकनीकों का समावेश नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी प्रणाली है जो स्वयं डेटा के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम है। इसमें सेंसर निरंतर सूचनाएँ एकत्र करते हैं, संचार नेटवर्क उन्हें तुरंत स्थानांतरित करते हैं, और एल्गोरिद्म इन सूचनाओं का विश्लेषण करके ऐसे निर्णय लेते हैं जो कभी केवल मानव अभियंताओं के विवेक पर निर्भर होते थे। उदाहरण के लिए, AI आधारित प्रणालियाँ बिजली की मांग का पूर्वानुमान लगा सकती हैं, संभावित दोषों की पहचान कर सकती हैं, उपकरणों के रख–रखाव की आवश्यकता का आकलन कर सकती हैं और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के उतार–चढ़ाव को संतुलित कर सकती हैं। इससे प्रणाली की दक्षता और विश्वसनीयता में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। तकनीकी दृष्टि से देखें तो इन प्रणालियों में मशीन लर्निंग आधारित लोड पूर्वानुमान (Load Forecasting), फॉल्ट डिटेक्शन के लिए एनॉमली डिटेक्शन एल्गोरिद्म, तथा फेजर मेजरमेंट यूनिट (PMU) के माध्यम से प्राप्त उच्च–आवृत्ति डेटा का विश्लेषण शामिल होता है। इसके अतिरिक्त, SCADA (Supervisory Control and Data Acquisition) और EMS (Energy Management System) के साथ AI का एकीकरण ग्रिड की निगरानी और नियंत्रण को अधिक सटीक एवं त्वरित बनाता है। इस प्रकार, आधुनिक विद्युत प्रणाली एक साइबर–भौतिक प्रणाली (Cyber & Physical System) का रूप ले चुकी है।

किन्तु यह प्रगति अपने साथ एक गंभीर प्रश्न भी लेकर आती है। यदि कोई AI आधारित प्रणाली गलत निर्णय ले ले और उसके परिणामस्वरूप व्यापक विद्युत अवरोध (ब्लैकआउट) हो जाए, तो उसकी जिम्मेदारी किस पर डाली जाएगी? इस प्रश्न को समझने के लिए एक काल्पनिक परिदृश्य पर विचार किया जा सकता है। मान लीजिए किसी महानगर में बिजली आपूर्ति का प्रबंधन एक AI आधारित लोड बैलेंसिंग प्रणाली द्वारा किया जा रहा है। एक दिन, दुर्लभ मौसम परिस्थितियों और अधूरी प्रशिक्षण डेटा के कारण यह प्रणाली मांग का गलत पूर्वानुमान लगा लेती है और एक महत्वपूर्ण ट्रांसमिशन कॉरिडोर को अलग कर देती है। कुछ ही मिनटों में यह निर्णय एक श्रृंखलाबद्ध विफलता में बदल जाता है, अस्पतालों को बैकअप पावर पर निर्भर होना पड़ता है, उद्योगों का उत्पादन रुक जाता है और जनजीवन अस्त–व्यस्त हो जाता है। बाद में जांच में यह सामने आता है कि समस्या एल्गोरिद्म की सीमाओं और डेटा की अपूर्णता के कारण उत्पन्न हुई थी। इस प्रकार की घटनाएँ केवल सैद्धांतिक नहीं हैंय विश्व के विभिन्न भागों में ग्रिड विफलताओं के उदाहरण यह दर्शाते हैं कि छोटी–सी

तकनीकी या निर्णयात्मक त्रुटि भी व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर सकती है। जब निर्णय प्रक्रिया में मानव की प्रत्यक्ष भूमिका सीमित हो जाती है, तब ऐसी विफलताओं की जटिलता और भी बढ़ जाती है।

उदाहरण के रूप में, जुलाई 2012 में भारत में हुई विशाल विद्युत ग्रिड विफलता को देखा जा सकता है, जिसे विश्व की सबसे बड़ी ब्लैकआउट घटनाओं में से एक माना जाता है। 30 और 31 जुलाई 2012 को उत्तरी, पूर्वी और उत्तर–पूर्वी ग्रिड के क्रमिक विफल होने के कारण लगभग 60 करोड़ लोग प्रभावित हुए थे। जांच में यह पाया गया कि अत्यधिक विद्युत मांग, ग्रिड मानकों का उल्लंघन तथा कुछ राज्यों द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक बिजली खींचने (overdrawal) के कारण प्रणाली अस्थिर हो गई थी। इसके परिणामस्वरूप ट्रांसमिशन लाइनों पर अत्यधिक भार पड़ा और एक श्रृंखलाबद्ध ट्रिपिंग (cascading failure) की स्थिति उत्पन्न हो गई। यह घटना इस तथ्य को रेखांकित करती है कि जटिल और परस्पर जुड़े विद्युत तंत्र में छोटे–छोटे विचलन भी बड़े पैमाने पर विफलता का कारण बन सकते हैं। और ऐसे में यदि निर्णय प्रक्रिया में AI की भूमिका हो, तो उत्तरदायित्व का प्रश्न और भी जटिल हो जाता है।

अब मूल प्रश्न उभरता है– इस विफलता के लिए उत्तरदायी कौन है? क्या यह जिम्मेदारी उस विद्युत कंपनी की है जिसने इस प्रणाली का उपयोग किया, या उस सॉफ्टवेयर कंपनी की जिसने एल्गोरिद्म विकसित किया, या उस अभियंता की जिसने इसे लागू किया, या फिर उस नियामक संस्था की जिसने इसे स्वीकृति दी? इस प्रकार के प्रश्न पारंपरिक कानूनी ढांचे के लिए नई चुनौती प्रस्तुत करते हैं।

इस संदर्भ में उत्तरदायित्व को एक बहु–स्तरीय ढांचे (Multi&layered Accountability Framework) के रूप में समझा जा सकता है। प्रथम, एल्गोरिद्म विकसित करने वाली सॉफ्टवेयर कंपनी की जिम्मेदारी है कि वह मॉडल को पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित, परीक्षणित और सत्यापित करे। द्वितीय, विद्युत उपयोगिता (Utility) की जिम्मेदारी है कि वह प्रणाली के परिनियोजन (deployment) और सतत निगरानी में उचित सावधानी बरते। तृतीय, अभियंताओं की भूमिका यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण है कि प्रणाली का एकीकरण और संचालन मानकों के अनुरूप हो। अंततः, नियामक संस्थाओं की जिम्मेदारी है कि वे ऐसे मानक और दिशानिर्देश विकसित करें जो इन सभी पक्षों की जवाबदेही को स्पष्ट रूप से परिभाषित करें। इस प्रकार, उत्तरदायित्व किसी एक इकाई पर केंद्रित न होकर विभिन्न हितधारकों में वितरित हो जाता है।

AI प्रणालियों की एक विशेषता यह है कि उनकी निर्णय–प्रक्रिया अक्सर "ब्लैक बॉक्स" की तरह होती है, अर्थात् उनके आंतरिक तर्क को आसानी से समझाया नहीं जा सकता। जबकि पारंपरिक सॉफ्टवेयर में प्रत्येक चरण को स्पष्ट रूप से ट्रेस किया जा सकता है, वहीं मशीन लर्निंग मॉडल सांख्यिकीय निष्कर्षों पर आधारित होते हैं जिनकी व्याख्या जटिल होती है। इस कारण जब कोई दुर्घटना होती है, तो यह निर्धारित करना कठिन हो जाता है कि त्रुटि कहाँ और कैसे उत्पन्न हुई। कानूनी दृष्टि से यह स्थिति और भी जटिल हो जाती है क्योंकि न्यायालयों को उत्तरदायित्व तय करने के लिए स्पष्ट कारण–परिणाम संबंध की आवश्यकता होती है।

इसके अतिरिक्त, AI आधारित प्रणालियों के साथ कुछ अंतर्निहित जोखिम भी जुड़े होते हैं। ये प्रणालियाँ प्रशिक्षण डेटा की गुणवत्ता पर अत्यधिक निर्भर होती हैं। यदि डेटा अपूर्ण, पक्षपाती या पुराना हो, तो निर्णय भी त्रुटिपूर्ण हो सकते हैं। समय के साथ परिस्थितियों के बदलने पर मॉडल का व्यवहार भी बदल सकता है, जिसे "मॉडल ड्रिफ्ट" कहा जाता है। साथ ही, चूँकि ये प्रणालियाँ संचार नेटवर्क और क्लाउड अवसंरचना पर आधारित होती हैं, इसलिए साइबर सुरक्षा के खतरे भी बढ़ जाते हैं। विद्युत प्रणाली जैसी महत्वपूर्ण अवसंरचना में ऐसी छोटी–सी त्रुटि भी बड़े पैमाने पर प्रभाव डाल सकती है।

भारत में विद्युत क्षेत्र मुख्यतः विद्युत अधिनियम, 2003 द्वारा नियंत्रित है, जो उत्पादन, संचरण और वितरण से जुड़ी संस्थाओं की जिम्मेदारियों को निर्धारित करता है। परंतु यह अधिनियम उस समय बनाया गया था जब AI आधारित स्वचालित निर्णय प्रणाली का व्यापक उपयोग नहीं था। परिणामस्वरूप, वर्तमान परिदृश्य में एक स्पष्ट नियामकीय अंतर दिखाई देता है। कानूनी सिद्धांतों जैसे लापरवाही, सख्त उत्तरदायित्व और परम उत्तरदायित्व को इन नई परिस्थितियों में लागू करना जटिल हो गया है। उदाहरणतः, यदि यह सिद्ध हो कि पर्याप्त परीक्षण या सावधानी नहीं बरती गई थी, तो लापरवाही का मामला बन सकता है। वहीं, विद्युत प्रणाली को एक खतरनाक गतिविधि मानते हुए सख्त या परम उत्तरदायित्व के सिद्धांत भी लागू हो सकते हैं, जहाँ दोष सिद्ध करना आवश्यक नहीं होता। भारत में स्मार्ट ग्रिड मिशन तथा विभिन्न राज्य विद्युत नियामक आयोगों द्वारा किए जा रहे आधुनिकीकरण प्रयास इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं, किन्तु AI आधारित निर्णय प्रणालियों के लिए विशिष्ट मानकों और उत्तरदायित्व निर्धारण के स्पष्ट प्रावधानों की अभी भी आवश्यकता है। यह आवश्यक है कि नीतिगत ढांचे में तकनीकी नवाचार के साथ–साथ जोखिम प्रबंधन को भी समान महत्व दिया जाए।

वैश्विक स्तर पर इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। यूरोपीय संघ ने AI को जोखिम के आधार पर वर्गीकृत करते हुए, ऊर्जा जैसी महत्वपूर्ण प्रणालियों में उपयोग होने वाले AI को उच्च जोखिम की श्रेणी में रखा है और उसके लिए पारदर्शिता, दस्तावेजीकरण और मानव निगरानी जैसी आवश्यकताएँ निर्धारित की हैं। भारत के लिए भी यह एक उपयोगी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। इस प्रकार के अंतरराष्ट्रीय प्रयास यह संकेत देते हैं कि भविष्य में AI आधारित प्रणालियों के लिए प्रमाणन (certification), ऑडिट और मानव पर्यवेक्षण (human & in & the & loop) अनिवार्य तत्व बन सकते हैं। भारत के लिए यह अवसर है कि वह इन वैश्विक अनुभवों से सीखकर एक सुसंगत और भविष्य उन्मुख नियामकीय ढांचा विकसित करे।

भविष्य की दृष्टि से यह आवश्यक है कि AI आधारित प्रणालियों के लिए एक सुदृढ़ नीति ढांचा विकसित किया जाए, जिसमें एल्गोरिद्म का नियमित ऑडिट, तकनीकी प्रमाणन, पारदर्शिता, साइबर सुरक्षा और उत्तरदायित्व बीमा जैसी व्यवस्थाएँ शामिल हों। इसके साथ ही अभियंताओं और विधिवेत्ताओं की भूमिका भी बदल रही है। अभियंताओं को अब केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि कानूनी और नैतिक पहलुओं की भी समझ रखनी होगी, जबकि विधिवेत्ताओं को तकनीकी जटिलताओं को समझकर नए प्रकार के उत्तरदायित्व सिद्धांत विकसित करने होंगे।

अंततः यह प्रश्न केवल तकनीकी या कानूनी नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक भी है। क्या AI हमारे लिए जोखिम को कम करता है या बढ़ाता है? क्या स्वचालन मानव त्रुटियों को घटाता है या नई प्रकार की अनिश्चितताओं को जन्म देता है? क्या हमें AI को सीमित करना चाहिए या इसके साथ संतुलित रूप से आगे बढ़ना चाहिए?

जैसे–जैसे हमारी अवसंरचना अधिक बुद्धिमान होती जा रही है, वैसे–वैसे जिम्मेदारी भी अनेक पक्षों में विभाजित होती जा रही है। इस परिवर्तनशील परिदृश्य में यह अनिवार्य है कि तकनीकी प्रगति के साथ–साथ हमारा कानूनी ढांचा भी विकसित हो, ताकि जवाबदेही, सुरक्षा और जनविश्वास को बनाए रखा जा सके। यही संतुलन भविष्य के स्मार्ट समाज की आधारशिला बनेगा। अंततः, स्मार्ट ग्रिड का भविष्य केवल तकनीकी उन्नति पर निर्भर नहीं करेगा, बल्कि इस बात पर निर्भर करेगा कि हम उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और विश्वसनीयता के प्रश्नों को कितनी गंभीरता से संबोधित करते हैं। यदि इन पहलुओं की उपेक्षा की गई, तो तकनीकी प्रगति के बावजूद जनविश्वास को बनाए रखना कठिन हो जाएगा।

पाविया विश्वविद्यालय के इतिहास संग्रहालय में एक सुबह

सोमक भट्टाचार्य
इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग, आईआईटी (बीएचयू), वाराणसी

जुलाई 2025 की शुरुआत में, मुझे पाविया विश्वविद्यालय में प्रसिद्ध प्रोफेसर माउरित्जियो बोजी द्वारा आमंत्रित अतिथि वक्ता के रूप में उपस्थित होने का अवसर मिला। यह विश्वविद्यालय इटली के मिलान शहर के बाहरी क्षेत्र में स्थित है। पिछली शाम के व्याख्यान के बाद, पीसा के लिए मेरी ट्रेन दोपहर में निर्धारित थी, इसलिए पाविया को अच्छी तरह जानने के लिए मेरे पास बहुत कम समय था।

पाविया विश्वविद्यालय दुनिया के सबसे पुराने विश्वविद्यालयों में से एक है, जिसकी स्थापना 1825 ई. में हुई थी। इसी कारण, इसकी 1200वीं वर्षगाँठ मनाने के लिए पूरे विश्वविद्यालय में उत्सव का माहौल था। किसी भी पश्चिमी विश्वविद्यालय की तरह, इसके अनेक विभाग पाविया शहर के विभिन्न क्षेत्रों में फैले। उनका ऐतिहासिक संग्रहालय टिचीनो नदी के तट पर विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन के ठीक बगल में स्थित है।

प्रोफेसर बोजी की एक भारतीय छात्रा अंजलि (जो संयोगवश आईईटी कानपुर से मुझसे कई वर्ष जूनियर थी), ने स्वतः ही मुझे पाविया घूमाने की जिम्मेदारी ली। 1200 साल पुराने इस विश्वविद्यालय के भीतर कदम रखते ही मुझे अत्यंत आनंद की अनुभूति हुई, यह शायद मेरे अति उत्साह या असीम जिज्ञासा से हुआ। मेरी पहचान जानकर, संग्रहालय के संरक्षण ने मेरे निःशुल्क प्रवेश की व्यवस्था की। यह उल्लेखनीय है कि यह संग्रहालय और प्रशासनिक भवन एलेसांद्रो वोल्टा, कैमिलो गोल्गी और एंटोनियो स्कार्पा की यादों से ओत–प्रोत हैं, जिन सभी ने इस विश्वविद्यालय पर अपनी प्रतिभाशाली बुद्धि अंकित की है।।

चित्र : विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के सामने लेखक

प्रोफेसर स्कार्पा, जो शरीरक्रिया विज्ञान के प्राध्यापक थे, छात्र समुदाय में अत्यंत सम्मानित थे। इसके विपरीत, छात्र उनके चिड़चिड़े स्वभाव के कारण उनके पास जाने से डरते थे। इन्हीं प्रो. स्कार्पा के सिर का प्रतिरूप आज भी पाविया विश्वविद्यालय के संग्रहालय में संरक्षित है। संयोगवश, कान के अंदर के तरल पदार्थ की खोज, यहाँ अपने शिक्षण काल के दौरान, स्कार्पा के शोध की उपलब्धि थी। प्रो. स्कार्पा इटालियन नेत्र विज्ञान के जनक भी हैं। हर्निया के भीतर की प्रावरणी और ऊरु त्रिभुज भी प्रो. स्कार्पा की खोजें थीं।

चित्र : एलेसांद्रो वोल्टा द्वारा उपयोग किए गए उपकरण

संग्रहालय का एक अन्य भाग भौतिकी खंड है, जो वोल्टा की यादों से भरा है। वोल्टा के चेहरे के विवरण को लेकर बहुत संशय है (अंग्रेजी में एक वाक्यांश भी है, "volte & face"), फिर भी उनकी वर्तमान प्रतिमा मानवशास्त्रीय शोध में AI का उपयोग करके स्थापित की गई थी। सुना गया है कि एक कुलीन महिला से विवाह के बाद, वोल्टा ने सार्वजनिक नजरों से दूर रहना पसंद किया।

इलेक्ट्रॉनिक्स के छात्र के रूप में, स्वाभाविक रूप से वोल्टा संग्रहालय देखकर मैं अति उत्साहित था। दुनिया की पहली बैटरी के जनक के कार्यस्थल पर खड़े होकर, 250 वर्ष पीछे सोचते हुए, ऐसा लगा जैसे एक पल के लिए समय रुक गया हो। यहाँ किसी भी अतिथि के लिए एक सरल प्रयोग उपलब्ध है।दो विद्युत जाँच–तार जोड़कर यह देखना कि मानव शरीर में प्रवाहित होने वाली अल्प मात्रा की धारा का विक्षेपण एक अमीटर द्वारा मापा जाता है। इस संग्रहालय में एक विशाल संधारित्र भी है, जिसका उपयोग वोल्टा ने यह सिद्ध करने के लिए किया था कि विद्युत आवेश और विद्युत विभव एक–दूसरे के समानुपाती हैं।

चित्र : वोल्टा की प्रतिमा के सामने लेखक (वोल्टा के लिए V)

चित्र : कैमिलो गोल्गी के 1906 के चिकित्सा नोबेल पुरस्कार के दस्तावेज

चित्र : कैमिलो गोल्गी की प्रतिमा

इस प्रशासनिक भवन का पुस्तकालय दुनिया के सबसे पुराने पुस्तकालयों में से एक है, जिसमें कैमिलो गोल्गी के 1906 के नोबेल पुरस्कार के दस्तावेज हैं। यह महान व्यक्तित्व, जो एक जीवविज्ञानी और एक विकृतिविज्ञानी दोनों था, केंद्रीय तंत्रिका तंत्र पर अपने कार्य के लिए नोबेल जीता।

यह सब देखते–देखते धीरे–धीरे ट्रेन पकड़ने का समय आ गया। अंजलि से विदा लेते हुए, खगोलविद गैलीलियो की गतिविधियों का शहर पीसा मेरा अगला गंतव्य था ।

পাভিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের অন্দরে

সোমক ভট্টাচার্য (2006 B.Tech, 2008 M. Tech)
Department of Electronics Engineering, IIT (BHU),
Varanasi, Uttar Pradesh 221005

2025 এর জুলাইয়ের গোড়ার দিক। প্রথিতযশা অধ্যাপক Maurizio Bozzi এর আমন্ত্রিত অতিথিরূপে ইটালির মিলান শহরের উপকণ্ঠে পাভিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ে বক্তা হিসেবে উপস্থিত এই অধম। বক্তৃতার পরদিন বিকেলের দিকে পিসা যাবার ট্রেন, ফলত সময় খুবই কম পাভিয়া কে ভালো করে জানবার। পাভিয়া বিশ্ব বিদ্যালয় পৃথিবীর অন্যতম প্রাচীন বিশ্ববিদ্যালয়, 825 খ্রিস্টাব্দে স্থাপিত। এই কারণে 1200 বছর পূর্তি উপলক্ষ্যে গোটা বিশ্ববিদ্যালয় জুড়েই উৎসবের আবহ। যে কোনো পাশ্চাত্য বিশ্ববিদ্যালয়ের মতই সমগ্র পাভিয়া শহর জুড়েই তাদের বিভাগগুলি বিস্তৃত। ত্রিশিয়ানো নদীর অনতিদূরে বিশ্ববিদ্যালয়ের প্রশাসনিক ভবনের লাগোয় তাদের ঐতিহাসিক যাদুঘর।

অধ্যাপক Bozzi এর এক ভারতীয় ছাত্রী অঞ্জলী (ঘটনাচক্রে IIT Kanpur এর আমার বেশ কয়েক বছরের কনিষ্ঠা) স্বতস্ফূর্ত ভাবে আমাকে পাভিয়া ঘোরানোর দায়িত্ব নিল। 1200 বছর পুরানো বিশ্ববিদ্যালয়ের অন্দরে প্রবেশ করতেই গায়ে যেন কাঁটা দিয়ে উঠলো (হয়ত উত্তেজনা তথা কৌতহল বশে)। যাদুঘরের তত্ত্বাবধায়িকা আমার বর্তমান পেশা সম্বন্ধে অবগত হয়ে বিনামূল্যে প্রবেশের ব্যবস্থা করে দেন। উল্লেখ্য, এই যাদুঘর তথা প্রশাসনিক ভবন Alessandro Volta, Camilo Golgi, এবং Antonio Scarpa এর স্মৃতিবিজড়িত, যারা প্রত্যেকেই এই বিশ্ববিদ্যালয়ে নিজেদের উৎকৃষ্ট মেধার স্বাক্ষর রেখেছেন।

শারীরবিজ্ঞানের অধ্যাপক স্কার্পা ছিলেন ছাত্রমহলে সমাদৃত। অপরদিকে, ছাত্র ছাত্রীরা তাঁর বদমেজাজের কারনে তাঁর ধার ঘেষতে ভয় পেতেন। এহেন স্কার্পার মুখমন্ডল পাভিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ের যাদুঘরে আজও সংরক্ষিত। প্রসঙ্গত, কর্ণের মধ্যস্থিত তরলের আবিষ্কার স্কার্পার এই পাভিয়া বিশ্ববিদ্যালয়ে অধ্যাপনা জীবনে গবেষণার ফসল। ইটালিয়ান চক্ষুবিদ্যার জনকও এই ব্যক্তি। এমনকি হার্নিয়ার মধ্যস্থ ফ্যাসিয়া ও ফিমোরাল ত্রিভুজও এই স্কার্পার আবিষ্কার।

যাদুঘরের অন্য অংশে পদার্থবিদ্যা বিভাগ ভোল্টার স্মৃতিবিজড়িত। ভোল্টার মুখমন্ডলির বিবরণ নিয়ে অনেক সংশয় আছে (ইংরেজিতে একটি শব্দও আছে, volte-face বলে), তবুও কৃত্রিম বুদ্ধিমত্তা প্রয়োগে নৃতত্ত্ব গবেষণায় ভোল্টার বর্তমান মূর্তিটি স্থাপিত। প্রসঙ্গত, এক অভিজাত নারীকে বিবাহ পরবর্তী জীবনে ভোল্টা লোকচক্ষুর আড়ালে থাকতেই পছন্দ করতেন। ইলেকট্রনিক্সের ছাত্র হবার কারণে স্বাভাবিকভাবেই ভোল্টা যাদুঘর দেখার উচ্ছাস সংবরণ করা কঠিন কাজ। পৃথিবীর সর্বপ্রথম ব্যাটারি আবিষ্কারের জনকের কর্মস্থলে দাঁড়িয়ে প্রায় আড়াইশো বছর আগের কথা সময়কে যেন এক লহমায় স্তব্ধ করে দেয়। দুটি ইলেকট্রিক প্রোবের সংযোগে মানুষের শরীরে যে স্বল্প পরিমাণ তড়িৎ প্রবাহ হয় এবং তা অ্যামিটার দিয়ে পরিমাপ করা সম্ভব, এই সহজ সরল পরীক্ষাটিও এখানে কোন অতিথি নিজে করে দেখতে পারেন। এই যাদুঘরেই স্থান পেয়েছে একটি ঢাউস ধারক, যার দ্বারা ভোল্টা প্রমাণ করেন যে তড়িৎ আধান ও তড়িৎ বিভব একে অপরের সমানুপাতিক।

এই প্রশাসনিক ভবনেই পৃথিবীর এক বহু প্রাচীন গ্রন্থাগার আছে, যাতে স্থান পেয়েছে 1906 সালে পাওয়া ক্যামিলো গলগির নোবেলের নথি। কেন্দ্রীয় স্নায়ুতন্ত্রের উপর কাজ করে নোবেল পান এই প্রবাদ প্রতিম ব্যক্তিত্ব, যিনি একাধারে জীববিজ্ঞানী, অন্যদিকে প্যাথোলজিস্ট।

এই সব দেখতে দেখতেই সময় চলে আসে ট্রেনের, অঞ্জলিকে বিদায় জানিয়ে পরের গন্তব্য জ্যোতির্বিদ গ্যালিলিওর কর্মকাণ্ডের শহর পিসা।

ओह अश्लिल!

प्रो. कमलेश सिंह,
धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग,
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

अश्लिल इतनी बेबस कभी न थी!
दूर–दूर तक कोई उसका अपना नहीं।
जब भी कोई मिला तो बस अपनी स्वार्थ–सिद्धि के लिए।
जब तक काम – तब तक साथ।
काम निकाला – और अपनी राह पकड़ी।
फिर, अश्लिल – अकेली की अकेली!

उसने अनंत शून्य में सूनी आँखों से कुछ देखने की कोशिश की। मानो – वह अपना अस्तित्व तलाश रही हो। कौन हूँ मैं? है कोई नाम? कोई स्थायी पहचान? कोई स्थायी ठिकाना? स्वयं से किये गए प्रश्न उसके मस्तिष्क में टीसें मारने लगे।

बात वर्षों पुरानी है, लेकिन घाव अभी भरे नहीं। यादें बिल्कुल ताजा। एक भव्य मन्दिर। मंदिर के गर्भगृह में विराजमान देव। दीये के मद्धिम प्रकाश में देवता की भव्य मूर्ति – लगता जैसे अब बोले या तब। प्रतिदिन देवता के सांध्यकालीन आरती का मंत्रोचार शुरू होते–होते, मुझे सजाकर, पैरों में घुँघरू बांधकर, पहुंचा दिया जाता। मन्त्रों, शंख–ध्वनियों और घंटियों की आवाज रुकने तक मेरे घुंघरुओं की छन–छन शुरू हो जाती। तबले की थाप, एक बूढ़े गायक की आलाप और सारंगी की धुन के साथ मुझ देवसेविका के नृत्यों की संगत परवान चढ़ती। नृत्य तब तक चलता जब तक कि देवता का पट बंद न हो जाता और महंत, पुजारी और सेवादारों के साधु–साधु की वाहवाही धूमिल न पड़ जाती। फिर मैं कब सोती, कब जगती, पता न चलता।

प्रकाश में देव कभी न दिखे। अंधेरों में कभी जाग्रत, कभी स्वप्न या दु:स्वप्न में भ्रम होता कि..... । साँझ को देवता वैसे ही मूर्तिमान।.... पुजारी का मंत्र..... महंत की भारी आवाज....... सेवादारों की भागमभाग।..... वृद्ध होती देवसेविकाओं की सूनी आँखें ..... और मेरी आँखों में अनगिनत प्रश्न। .... कभी कोई उत्तर नहीं मिला।

क्या मैं इसे अपना घर मान लूँ?

चुप! तू यहां के पवित्र स्थान के लायक नहीं। अगर यह यहां रही तो सबकी प्रतिष्ठा मिट्टी में मिला देगी।

तो कहाँ है मेरा घर? कोई चारदीवारी – कोई छत?

लगता है – अब उसके सिर पर कोई छत नहीं बचेगी। क्रूर जमाने ने उसके परिभाषित आवासों पर बुल्डोजर चलाने का अभियान–सा छेड़ दिया है। एक के बाद एक उसके प्रतीक किसी और के प्रतिमान बनते गए। जैसे – कुमारसम्भव का आठवां सर्ग "श्रृंगार की अष्टाध्यायी" हो गया!

प्राचीन काल में उसका एक ठिकाना कतिपय मन्दिरों और गुफाओं में था। लेकिन वहां एक आधुनिक कलाश्री ने अपना दावा ठोक दिया। खूब बहस हुए। शास्त्रों से विज्ञान तक – परम्परा से विधान तक! किन्तु विद्वानों की राय में अश्लिल का पक्ष कमजोर निकला और खजुराहों जैसे कई किले कलाश्री के नाम कर दिए गए। लाचार अश्लिल लालबत्ती क्षेत्र वाले अंधेरे घरों तक सिमट गई।

समय ने पंख फड़फड़ाए। अश्लि भी तमसो मा ज्योतिर्गमय की इच्छा लिए अंधेरी कोठरी से निकलकर शहर के खूबसूरत पार्क का रुख किया। चांदनी रात का खुलापन उसे भा गया। सड़क किनारे आम्रपाली के पेड़ों पर प्रौढ़ होती मंजरों से मदनरस की सूक्ष्म बूंदे टपक पड़ती। बेला, चमेली की खुशबू ने जादू करना प्रारंभ किया। शीतल पुरवाई ने अंगड़ाई ली और अश्लि अपनी बाहें फैलाकर झूमने लगी। पुरवा हवा के झोकों ने उसके विपुल केशराशि के गुच्छों से उसके दमकते मुखमंडल को अच्छादित कर दिया। उसने अस्तव्यस्त बालों और परिधानों को संभालते–संभालते आंचल से सिर को ढका और सलीके से उसके एक कोने को दांतों से दबा लिया।

शुभ्र दांतों की पंक्तियों ने मोती बिखेर दिए। वह चौंक उठी – किसी ने कुछ देखा क्या?

उसकी दृष्टि आकाश में पहुंची, चंद्रमा उसे ही निहार रहा था। वह मुस्करा उठी और पास की बेंच पर लेट गई। उसने अपनी दृष्टि पूर्णमासी के दमकते चांद पर केंद्रित की, उसे लगा चांद पास आता जा रहा है। पास३.. और पास। अब तो चांद और चांद जैसे मुखड़े के बीच कोई दूरी न रही। समुद्र की उफनती लहरों के बीच चांद बादलों की चादर में छुप गया।

समय बदला, मौसम बदला, पुरवाई मंद पड़ी और पश्चिम से एक नई हवा चल निकली। 'खुल्लम खुल्ला खुले आम, थोड़ा राक थोड़ा पाप' के धूम धड़ाके के साथ अवतरित 'हॉट पछुवा' ने 'सुहानी पुरवइया' का रुख पलट दिया। नई पीढ़ी पर नवीन ऊष्मा का असर हुआ और बदन की तपिश ने परिधानों के पर कतरने शुरू कर दिए। अश्लि को भी यह परिवर्तन अच्छा लगा। उसने हॉलीवुड की नई–नई शागिर्दी कर रहे बॉलीवुड की 'ए' ग्रेडधारी फिल्मों से अपना नया करियर शुरू किया।

अनिश्चितता की एक अंधेरी रात में बाबा कोंडके का दिया आशीर्वाद स्वरूप उसके हाथ में आ गया। फिर तो धूम ही मच गई। रुपए बरसने लगे। अश्लि ने लाल कपड़े में लिपटे महर्षि वात्स्यायन रचित शास्त्र को माथे से लगाया और अपनी दुनिया को बेकार लोगों से सुरक्षित रखने की प्रतिज्ञा की। मनोरंजन जगत में टू–पीस अश्लि–वस्त्र अनुष्ठान की सफलता हेतु अनवरत विविध प्रयोग और अथक प्रयत्न किये गए। और "राम तेरी गंगा तट" पर इस अनुष्ठान को लोकप्रियता के चरम पर प्रतिष्ठित करने का प्रण लिया गया। लगा कि अश्लि के अच्छे दिन लंबे समय तक साथ देंगे!

पर हाय री किस्मत! अश्लि की पुरातन प्रतिद्वंद्वी यहां भी पहुंच गई। कलाश्री ने अश्लि के टेरिटरी को चुनौती दे डाली। उसके सूत्र वाक्य 'दोष दृश्य में नहीं दृष्टि में होता है' के विरुद्ध अश्लि के पास कोई तर्क नहीं बचा। फिर क्या जी? बॉडी पेंट में सजी कलाश्री के व्यक्तित्व के सामने अश्लि की माइक्रोड्रेस का जलवा आउटडेटेड फैशन की हीनभावना से ग्रसित हो मद्धिम पड़ गया।

अश्लि पुनः निराश होने लगी।

तभी उसने निश्चय किया कि अब वह कोई शरण नहीं बल्कि न्याय मांगेगी। वह अपनी भाषा मांगेगी, स्पष्ट परिभाषा मांगेगी।

भाषाएँ उसे कई पसन्द हैं, किन्तु भोजपुरी उसके दिल में बसती है। इस भाषा के लोकप्रिय कलाकारों और गीतकारों ने अश्लि के शब्दकोशों को खूब समृद्ध किया है, बदले में – अकूत धन पाया है।

कुछ अति–उत्साही कलाकार मात्र गीत नहीं गाते – गीतों में बायोलॉजी का रस घोल देते हैं। नासिका के नीचे से घुटने के ऊपर तक के सीमित क्षेत्रों को असीमित विधियों, प्रयोगों, उपमाओं और घटनाओं के अद्भुत

वर्णन से श्रोताओं को शरीरविज्ञान का इतना सटीक ज्ञान पिलाते हैं कि फिजिओलॉजी के प्रोफेसरों को अपनी पढ़ाई पर शक होने लगे।

ये भोजपुरिया महापुरुष न होते तो अश्लि शायद इस दुनिया से विदा हो गई होती। यह अश्लि का सौभाग्य है कि जनता अपने मनोरंजन के बदले उसके कुछ परिचित स्टारों को कानून बनाने की फैक्ट्री में भर्ती करा दिया है। वह मदद की गुहार लेकर दिल्ली पहुँच गयी। उसने उन को टेलीविजन पर नए लॉन्च हुए डांस नंबर में मगन देखा।

अश्लि ने अपने तारनहारों को झुककर प्रणाम किया। अपनी पुरानी पहचान का वास्ता देकर उसने अपनी पहचान के संकट का जिक्र किया। उसने कहा – भोजपुरी मेरी आखरी आस है। इसी भाषा–वृक्ष के तले किसी कोने में मुझे मेरा अधिकार दिला दो।

लेकिन यह क्या? उन्होंने जिस अश्लि को कभी पुचकारा और संवारा था, उसे पहचानने तक से मना कर दिया।

अश्लि गुस्से में तमतमा उठी। बिफरते हुए कहा – 'कितनो गीतों में तुमने मुझे इस्तेमाल किया, और अब तुम मेरा चेहरा भूल गए?'

झूठ! एकदम झूठ! तुमसे मेरा क्या सम्बन्ध?

साथ बैठा "दुसरे" ने लापरवाह अंदाज में कहा – सम्बन्ध का क्या – आज है, कल नहीं। इसे अन्यथा न लो।

अश्लि तिलमिला उठी। अगर वह अपनी पर आ जाये तो कुछ भी कर देगी।

उसने टेलीविजन के रिमोट को "तीसरे" के सामने रखते हुए पूछा – तुम तो इसके आविष्कारक हो। इसी से सबको नचाते आये हो, इसे तो नहीं भूल सकते।

अरे भईया, हम कहाँ का वैज्ञानिक हूँ जो रिमोट बना दिए। देखो – एक बड़ी साजिश चल रही है हमरे खिलाफ! हम तो स्वच्छता को समर्पित लोग हैं। और जहां तक भोजपुरी का सवाल है – तो जान लो कि छठी मईया के किरपा से – भोजपुरी क्षेत्रीय नहीं, ग्लोबल हो गयी है। विश्वास नहीं तो ध्यान से सुनो पंजाब से आ रही भोजपुरी की एक नयी आहट –

मैनियॉक.......... मैनियॉक.......... दीदीया के देवरा..........

इस विश्वविद्यालय में संकुचित साम्प्रदायिकता को आश्रय नहीं दिया जायेगा वरन उस व्यापक उदारता और धार्मिक भावना को प्रोत्साहन दिया जायेगा जो मनुष्य और मनुष्य के बीच भ्रातृत्व की भावना का विकास कर सके

~ मदन मोहन मालवीय

स्थापना दिवस (23.01.2026)

संस्थान में दिनांक 23.1.2026 को वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इसी शुभ दिन वर्ष 1916 में वसंत पंचमी के दिन का.हि.वि. की स्थापना हुई थी।

आगमन

सृष्टि स्वरुपा
विद्युत् अभियांत्रिकी विभाग
(बी.टेक तृतीय वर्ष)

सितम्बर शुरू हो चुका था। बरसात अब थमने लगी थी और कुछ दिनों पहले तक अमूमन बादलों से घिरा रहने वाला आसमान अब कुछ ज्यादा साफ नजर आने लगा था। धुले हुए पत्ते, दीवार की दरार से झाँकती घास, सड़कों पर एक बार फिर शुरू हुआ मरम्मत का काम सब मिलकर गुजरे हुए मानसून की गवाही दे रहे थे। इन सबके बीच श्रीजा भी चेहरे पर हल्की किरणें महसूस करते हुए, सुबह की चाय की हर घूँट के साथ खुद को मौसम में आए बदलाव के अनुरूप ढाल रही थी। बीते एक–दो दिन से उसके गले में तकलीफ थी, और आज तो उसने डॉक्टर के पास जाने के लिए छुट्टी ली थी।

चाय खत्म करके वो तेज कदमों से मेन गेट की तरफ जाने लगी। वो अभी गेट के पास पहुँची ही थी कि एक जानी–पहचानी खुशबू से उसके पैरों पर ब्रेक लगा। उसने सिर उठाकर ऊपर देखा तो पाया कि वो सही थी, ये वहीं श्शिउलीश के फूल थे। वैसे तो ये फूल हर साल खिलते थे, हर साल इनकी गंध यादों के कुछ पन्ने पलटती, और हर बार श्रीजा इस किताब को ही बंद कर देती। ऐसा करते हुए उसे चार साल हो गए थे।

गेट से थोड़ा आगे बढ़ते ही उसे ऑटो मिल गया था। रास्ता थोड़ा लंबा था, और इस बार शायद पन्ने भी कुछ ज्यादा ही पलट गए थे, इसलिए इस बार किताब बंद होने की जगह एक फिल्म बनकर उसके स्मृतिपटल पर चलने लगी थी। कोलकाता का उनका घरय शिउली का पेड़य माँ, बाबा और बड़ी माँ। जैसे ही उस पौधे पर फूल आते, वो खुश हो जाती कि दुर्गा पूजा आने वाला है, माँ का आगमन होगा। फिर बड़ी माँ से सवालों की फेहरिस्त चालू हो जाती – कितना बड़ा अल्पना बनेगा, नए कपड़े खरीदने कब जाएँगे, बच्चे कल्चरल प्रोग्राम में इस बार क्या करेंगे – उसके सवाल कभी नहीं रुकते।

बचपन से ही माँ–बाबा के काम में व्यस्त होने के कारण उसका अधिकतर समय बड़ी माँ के साथ ही बीता था। किताबों का बहुत शौक था उन्हें, उन्होंने ही श्रीजा का परिचय किताबों की दुनिया से करवाया था। श्रीजा की नौकरी को लेकर वो बहुत खुश थीं, पर आना–जाना कौन रोक पाया है। उनका जाना श्रीजा को अंदर से खाली कर चुका था। जब भी समय मिलता, वो दो–चार दिन के लिए श्मेहमानश की तरह घर चले जाती, पर इन बीते सालों में उसे कभी भी दुर्गा पूजा के लिए छुट्टी लेने की हिम्मत नहीं हुई।

दिन बीतते गए। आज उसे ऑफिस के काम से सुबह चार बजे बाहर निकलना था। बाहर निकलते ही हवा में आने वाली ठंड की दस्तक महसूस हो रही थी। आसमान में बादल न थे, फिर भी चाँद नहीं दिख रहा था। उसके फोन पर लगातार नोटिफिकेशन्स आ रहे थे, ये सब श्महालयाश के लिए था। ये इकलौता दिन होता था जब वो बड़ी माँ की एक आवाज पर उठ जाया करती थी। थोड़ा सा टिककर, गहरी साँस भरते हुए जब उसने बाहर नजर डाली, तो कार के शीशे पर बाहर के छोटे–छोटे लाइट्स के बीच में उसका चेहरा रिफ्लेक्ट हो रहा था। इयरफोन्स लगाकर जैसे ही आँखें बंद कीं, अनायास ही दो बूँद गिर पड़े। इतने सालों में पहली बार उसे पूजा के समय घर जाने की इच्छा हुई।

पूरे समय उसके मन में यही बात चल रही थी। मन अंतर्द्वंद्व में उलझा हुआ था। इसी उलझन के साथ वो अगले दिन वापस लौट रही थी कि उसे दूर से जयघोष सुनाई दिया। दिल, दिमाग और पैर एकदम से स्थिर हो गए। आवाज की तीव्रता बढ़ती गयी और कोने से एक टोली प्रकट हुई जो अपने साथ माँ दुर्गा की प्रतिमा ले जा रहे थे। अगल–बगल के लोग, जो अब तक पूरी रफ्तार से भाग रहे थे, कुछ पल के लिए रुककर शीश

झुकाने लगे। अचानक से एक ठहराव आ गया। प्रतिमा का मुख ढका हुआ था, पर फिर भी श्रीजा माँ को एकटक देखते रही। उसे अब पता था कि क्या करना है।

अभी पूजा में दो दिन का समय शेष था, और श्रीजा अपने घर पर थी। पहली बार उसने माँ–बाबा के सफेद बाल, झुर्रियों और थकान पर ध्यान दिया तो लगा कि चार साल में कितनी उम्र गुजर जाती है। सबसे पहले वो बड़ी माँ की छोटी–सी लाइब्रेरी में गयी। किताबें तो अब भी करीने से लगी थीं। हाथ में लेते ही वही एहसास, वही खुशबू बस थोड़ी धूप दिखाने की जरूरत थी।

शाम को जब वो माँ के साथ आँगन में शिउली के नीचे अल्पना बना रही थी तो छोटा मीकू भागता–भागता आया और एक ही साँस में कल्चरल प्रोग्राम के रिहर्सल करवाने के लिए पूछ लिया। श्रीजा अल्पना पर गिरे शिउली की ओर देख मुस्करायी और हाँ में सिर हिला दिया। मीकू तो खुश हो ही गया, माँ के चेहरे पर भी मुस्कान तैर गयी। शायद स्वीकृति से उसका खालीपन कुछ कम होने लगा था।

"भारतवर्ष केवल हिन्दुओं का देश नहीं है, यह तो मुस्लिम, ईसाई और पारसियों का भी देश है यह तभी समुन्नत और शक्तिशाली हो सकता है जब भारतवर्ष की विभिन्न जातियाँ और यहाँ के विभिन्न संप्रदाय पारस्परिक सद्भावना और एकात्मकता के साथ रहें जो भी लोग इस एकता को भंग करने का प्रयास करते हैं वे केवल अपने देश के ही नहीं, अपनी जाति के भी शत्रु हैं।"

~ मदन मोहन मालवीय

(लघु हिन्दी कहानी : सत्य-कथा)

क्या भाषा जरूरी है ?

रीतेश रंजन सिन्हा
सहायक सुरक्षाधिकारी (ग्रेड-I)
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का.हि.वि.वि.)

मुझसे केवल डेढ़ वर्ष छोटा था, मेरा सहोदर भाई – मीतेश। हम चार भाई बहनों में से तीसरा। घर में उसे प्यार से हम सब अलग–अलग नाम से बुलाते ।

उसकी कुछ खासियत थी, जो अन्य लोगों से उसे बिल्कुल 'अलग' बनाती थी।

वह था, उसका हम सबके प्रति निश्चल, निष्कपट, निष्काम, शाश्वत और अगाध प्रेम। जब भी हमारी आंखे उसकी ओर जाती एक 'निर्बंध–स्मिति' उसके चेहरे पर अनायास ही देखने को मिलती। वो भाव शब्द–बंधनों से परे थे।

एक और बात थी, जो उसे सामान्य लोगों से अलग बनाती थी, डाक्टर उसे "सेरेब्रल पालसी" से ग्रसित बताते थे। समय के साथ उसका शरीर तो बढ़ता रहा, लेकिन शरीर के अनुपात में उसके मस्तिष्क और शारीरिक मांसपेशियों का विकास अवरुद्ध रहा जिसके कारण वह चल और बोल नहीं पाता था। वह कुछ "अस्पष्ट और अपरिभाषित" आवाजें निकाल सकता था जिसे शब्द–बद्ध करना संभव ही नहीं।

अपनी सभी दैनिक जरूरतों के लिए वह हम सभी पर आश्रित था।

ईश्वर प्रदत्त कमियों के बावजूद, हमें उसको या उसे हमें कुछ भी 'समझने–समझाने' में कोई दिक्कत नहीं आई। न तो उसने कभी अपनी लाचारी को शब्दों मे बयां किया, न ही अपनी खुशी को। वह हमारी बातें समझ जाता और हम उसकी जरूरतें।

"भाषा मनोभावों के सम्प्रेषण का माध्यम तो होती है, परंतु मनोभावों को समझने के लिए कई बार अनिवार्य नही होती"।

अक्सर माँ कहती, वह मेरा "पीठिया" भाई है, शायद यही वजह थी कि उससे मेरा लगाव अन्य भाई–बहनों की अपेक्षा ज्यादा था।

वह अक्सर मुझे देखकर कुछ 'अपरिचित और अनूठे' तरीके से चिल्लाता या आवाज देता जिसका भाषाई मानदंडों पर कोई 'अर्थ' ही नहीं। मैं भी लंबे समय तक वैसे ही "अनर्गल" बातें उससे करता। फिर हम दोनों अनायास ही खुश हो जाते, जैसे मैंने उसकी बातों का भावानुवाद करके उसे पूरी तरह समझ लिया हो और वह भी मेरी बातों से पूर्णतया सहमत हो।

"जब दो लोग एक–दूसरे के भावनाओं की अनुभूति एक अपरिचित, अपरिभाषित और अनूठे आपसी समन्वय से कर लेते हैं, तो भाषा का कोई अर्थ नहीं रह जाता।"

मैं उसे कभी "छोटू" , कभी "गुल्लू" , कभी "पुचिया" और पता नहीं कितने "अनर्थक" नामों से बुलाता और हर नए नाम पर उसकी सहर्ष स्वीकृति रहती। जैसे उन सभी नामों का 'शब्दार्थ' उसे पता हो और यह भी कि ये सारे नाम उसके ही हैं।

१९६७ में जब मैंने भारतीय वायु सेना ज्वाइन की, तब हमारे यहां टेलीफोन नहीं हुआ करता था। पत्र ही एकमात्र साधन था एक दूसरे से जुड़े रहने का। १६ महीने की ट्रैनिंग के दौरान एक बार भी मेरी उससे बात नही हुई, और हो भी कैसे पाती ?

ट्रैनिंग के पश्चात जब मैं चेन्नई (तब मद्रास) से निकला तो पूरे रास्ते यही सोचता रहा कि 'क्या मैं याद भी होऊँगा' उसे ?

यह सोचते–सोचते मैं जैसे ही घर के अहाते में घुसा, छोटू अचानक बहुत खुश हो गया, जैसे कुछ अप्रत्याशित घटित हुआ हो। जैसे उसे मेरे आने के अनुभूति हवाओं ने पहले ही दे दी हो ।

जैसे ही मैं उसके पास पहुंचा तो मेरी 'निगाहों के स्पर्श' पर वो भाव–विह्वल हो गया, और जब मैने उसके माथे पर हाथ रखा तो उसकी आँखें भर आई। मैने उसे गले से लगा लिया। हम दोनों उस दिन एक अरसे के बाद 'मन–भर' कर रोए, जैसे महीनों का दर्द आंसुओं में बहाने की कोशिश कर रहे हों। मानों हमदोनों बिछड़े समय की आपबीती सुना रहे थे।

"जब मनोभाव तीव्र आवेग से एकाएक बाहर आते हैं, तो शब्द उन भावनाओं को बांध पाने मे अक्सर असफल हो जाते हैं। हम किसी के सामने तब तक कमजोर नही होते जब तक एक–दूसरे की भावनाओं की गहराई में न उतर जाएं। यहाँ अनुभूतियों को शब्दों मे पिरोना असंभव होता है"।

दिसंबर २००० की सर्दियों में छोटू इस भौतिक दुनिया को अलविदा कर अनंत की ओर प्रस्थान कर गया।

"शाश्वत–प्रेम समय, दूरी या किसी भी भौतिक बंधन को नहीं मानती" । उसका निश्चल, निष्कपट, निष्काम, शाश्वत और अगाध प्रेम आज भी मेरे अंतस्थल में विद्यमान है।

भाषा की खाई अक्सर दूरियाँ बढ़ाती हैं। भाषा के सम्प्रेषण में त्रुटियों से आपसी संबंध बिगड़ सकते हैं, भावनाओं के सम्प्रेषण में यह कदापि संभव नहीं। विश्व भर में आ रहे तकनीकी बदलावों ने सम्प्रेषण को और अधिक आसान बनाने की कोशिश की है। इन परिदृश्यों मे 'दीर्घ–प्रश्न' यह है कि क्या भावों के आवेग या मनोभावों को क्या सच मे शब्दबद्ध किया जा सकता है या संप्रेषित किया जा सकता है ?

सत्येन ब्रह्मचर्येण व्यायामेनाथ विद्यया /
देशभक्त्याऽत्यागेन सम्मानर्हः सदाभव //

~ मदन मोहन मालवीय

संघर्ष, श्रद्धा और मानवता की मिसाल की कहानी

सोमदेव केशरी
कनिष्ठ अधीक्षक

राजू आज बहुत प्रसन्न था। वर्षों के कठिन संघर्ष, असफलताओं और धैर्य के बाद आखिरकार उसे सफलता मिल ही गई थी। उसे अपने ही जिले में सरकारी नौकरी मिल गई थी। यह केवल एक नौकरी नहीं थी, बल्कि उसके सपनों की पहली सीढ़ी थी। अब वह अपने माता–पिता और परिवार की जिम्मेदारियों को अच्छी तरह निभा सकता था। उसके चेहरे पर संतोष और आत्मविश्वास साफ झलक रहा था।

संघर्ष के दिनों में राजू ने कई कठिनाइयों का सामना किया था। उस समय उसके साथ काम करने वाले कुछ साथी उसके सच्चे शुभचिंतक बन गए थे। वे अक्सर माता वैष्णोदेवी के धाम की यात्रा करते थे और हर बार वे राजू के लिए प्रार्थना करते थे कि उसे एक दिन जरूर सफलता मिले। उन्होंने मन ही मन यह भी संकल्प लिया था कि जब राजू की नौकरी लग जाएगी, तो वे उसके साथ वैष्णोदेवी धाम जाकर माता के दर्शन करेंगे।

जब राजू की नौकरी लग गई, तो उसे अपने साथियों की बात याद आई। उसने भी मन में निश्चय किया कि वह माता वैष्णो देवी के दरबार में जाकर उनका आशीर्वाद अवश्य लेगा। कुछ समय बाद उसने जम्मू जाने का निर्णय लिया और कटरा से माता के दरबार तक की कठिन यात्रा शुरू की।

रात का समय था और पहाड़ों की चढ़ाई कठिन थी। ठंडी हवा, ऊँचे–नीचे रास्ते और लंबी दूरी–इन सबके बावजूद राजू के मन में श्रद्धा और उत्साह भरा हुआ था। वह लगातार आगे बढ़ता रहा। यह यात्रा आसान नहीं थी, लेकिन उसके विश्वास ने उसे थकने नहीं दिया। अंततः उसने दर्शन किए और मन ही मन माता का धन्यवाद किया।

लेकिन इस कठिन यात्रा का असर उसके शरीर पर साफ दिखाई दे रहा था। वह बेहद थका हुआ था। धाम से लौटकर वह कटरा पहुँचा और रात के समय एक ऑटो में बैठकर होटल जाने की सोच रहा था। वह किसी अच्छे होटल में जाकर आराम करना चाहता था।

इसी बीच एक घटना ने उसके जीवन को एक नया मोड़ दे दिया। एक महिला अपने लगभग तीन वर्षीय बच्चे के साथ उसके पास आई और विनम्रता से बोली कि अगर आप लोग स्टेशन जा रहे हैं, तो मुझे भी अपने साथ ले लीजिए। वह किराए का आधा हिस्सा देने को तैयार थी। राजू और उसके साथी ने सहमति दे दी और वे सभी एक ही ऑटो में बैठ गए।

कुछ दूरी तय करने के बाद, वह महिला एक चौराहे पर ऑटो रुकवाती है और कहती है कि उसका सामान सामने की दुकान पर है, वह लेकर आती है। यह कहकर वह अपने छोटे बच्चे को राजू के भरोसे छोड़कर चली जाती है।

समय बीतता गया। आधा घंटा गुजर गया, लेकिन वह महिला वापस नहीं आई। अब राजू चिंतित होने लगा। बच्चा भी अपनी माँ के लिए बेचौन होने लगा। इसी दौरान ऑटो चालक राजू को समझाने लगा कि वह महिला अब वापस नहीं आएगी और उन्हें बच्चे को वहीं छोड़कर आगे बढ़ जाना चाहिए।

यह सुनकर राजू के मन में कई विचार आने लगे। एक ओर उसकी थकान थी और दूसरी ओर एक मासूम बच्चे की जिम्मेदारी। उसने सोचा कि अगर वह भी उस बच्चे को छोड़कर चला गया, तो उस बच्चे का क्या होगा?

राजू ने दृढ़ता से निर्णय लिया कि वह ऐसा नहीं करेगा। उसने ऑटो चालक से कहा कि अगर हमें आगे जाना है, तो पहले इस घटना की सूचना पुलिस स्टेशन में देनी होगी। लेकिन ऑटो चालक इस बात के लिए तैयार नहीं हुआ और बहस करने लगा। उसने राजू को डराने की कोशिश भी की, लेकिन राजू अपने निर्णय पर अडिग रहा।

उसने बच्चे को अपने पास ही सुरक्षित रखा और वहीं इंतजार करने लगा। समय धीरे–धीरे बीतता गया। लगभग एक घंटे के बाद, वह महिला हांफती हुई वापस आई। उसके चेहरे पर घबराहट साफ झलक रही थी। उसने आते ही अपने बच्चे को गले से लगा लिया और राजू का धन्यवाद किया।

महिला ने बताया कि वह सामान लेने गई थी लेकिन वह उस दुकान को भूल गई थी, जहां सामान रखा था। इस कारण से देर हो गई। वह बहुत चिंतित थी कि कहीं उसका बच्चा खों न जाए। जब उसने देखा कि राजू ने उसके बच्चे को सुरक्षित रखा है, तो उसकी आँखों में कृतज्ञता के आँसू आ गए।

राजू ने यह देखकर राहत की सांस ली। उसे यह महसूस हुआ कि सच्ची मानवता क्या होती है। उस दिन उसने केवल एक बच्चे की सुरक्षा ही नहीं की, बल्कि एक माँ के विश्वास को भी बनाए रखा।

इस घटना के बाद राजू के मन में और भी दृढ़ता आ गई कि जीवन में चाहे कितनी भी कठिनाइयों क्यों न आएँ, हमें सही रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए। यही सच्ची सफलता है।

मोस्त ऑफ द स्टोरी (कहानी की सीख)

सच्ची सफलता केवल अपने लक्ष्य प्राप्त करने में नहीं, बल्कि मानवता, जिम्मेदारी और सही निर्णय लेने में होती है।

जब मैं था तब हरि नहीं
अब हरि हैं मैं नाहिं
सब अंधियारा मिट गया
जब दीपक देख्या माहिं

कबीर साहब

सन्नाटे के बीच आवाज

पारुल
वरिष्ठ सहायक
व्यापार विपत्र अनुभाग

वरुणा ने जब नई–नई नौकरी जॉइन की, तो उसके मन में सपनों की एक पूरी दुनिया थी। उसने हमेशा मेहनत और ईमानदारी को अपनी सबसे बड़ी ताकत माना था। उसे विश्वास था कि उसकी काबिलियत ही उसे आगे बढ़ाएगी। लेकिन कुछ ही महीनों में उसे समझ आने लगा कि कार्यस्थल केवल काम का स्थान नहीं, बल्कि राजनीति का भी मैदान है।

ऑफिस का माहौल ऊपर से शांत और व्यवस्थित दिखता था, लेकिन भीतर ही भीतर कई तरह के समीकरण चलते रहते थे। वरुणा ने गौर किया कि कुछ लोग हमेशा अपने बॉस के आसपास ही रहते हैं, छोटी–छोटी बातों पर उनकी तारीफ करते हैं और दूसरों की गलतियों को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करते हैं। शुरुआत में वरुणा ने इन बातों पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जल्द ही उसे इसका असर अपने काम पर महसूस होने लगा।

एक दिन वरुणा ने एक महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट पर काफी मेहनत की। उसने देर रात तक काम करके उसे समय पर पूरा किया। उसे उम्मीद थी कि उसकी सराहना होगी। लेकिन जब मीटिंग हुई, तो उसके वरिष्ठ अधिकारी ने उस प्रोजेक्ट का श्रेय किसी और को दे दियाकृ तनय को, जो अक्सर बॉस के साथ ज्यादा समय बिताता था।

वरुणा के लिए यह एक बड़ा झटका था। उसे लगा कि उसकी मेहनत बेकार चली गई। वह बहुत दुखी हुई, लेकिन उसने किसी से कुछ नहीं कहा। उसने सोचा कि शायद अगली बार उसे उसका हक मिलेगा।

धीरे–धीरे वरुणा को समझ आने लगा कि यह कोई एक बार की घटना नहीं है। ऑफिस में एक छोटा–सा समूह था, जो एक–दूसरे का समर्थन करता था और बाकी लोगों को पीछे रखने की कोशिश करता था। इस राजनीति का सबसे ज्यादा असर महिलाओं पर पड़ता था। यदि कोई महिला अपने हक की बात करती, तो उसे "झगड़ालू" या "अहंकारी" कह दिया जाता।

एक दिन वरुणा ने अपनी सहकर्मी साक्षी से इस बारे में बात की। साक्षी ने गहरी सांस लेते हुए कहा, "वरुणा, यहाँ काम के साथ–साथ राजनीति समझना भी जरूरी है। अगर तुम चुप रहोगी, तो लोग तुम्हारे हक छीनते रहेंगे।"

वरुणा ने पहली बार इस स्थिति को गंभीरता से सोचा। उसे एहसास हुआ कि केवल मेहनत करना ही काफी नहीं है, बल्कि अपने काम को सही तरीके से प्रस्तुत करना और अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाना भी जरूरी है।

अगले ही सप्ताह एक और मीटिंग हुई। इस बार भी वरुणा ने एक प्रोजेक्ट पर काम किया था। जैसे ही उसके बॉस ने फिर से किसी और को श्रेय देने की कोशिश की, वरुणा ने विनम्र लेकिन आत्मविश्वास के साथ कहा, "सर, इस प्रोजेक्ट पर मैंने काम किया है और इसके कुछ महत्वपूर्ण हिस्से मैं खुद प्रस्तुत करना चाहूँगी।"

कमरे में कुछ पल के लिए सन्नाटा छा गया। सभी की नजरें वरुणा पर थीं। यह पहली बार था जब उसने खुलकर अपनी बात रखी थी। उसके बॉस ने थोड़ी झिझक के बाद उसे बोलने की अनुमति दी।

वरुणा ने पूरे आत्मविश्वास के साथ अपना काम प्रस्तुत किया। उसकी तैयारी और स्पष्टता देखकर सभी प्रभावित हुए। मीटिंग के बाद कई सहकर्मियों ने उसकी तारीफ की। साक्षी ने मुस्कुराते हुए कहा, "आज तुमने सही मायने में अपनी जगह बना ली।"

धीरे–धीरे वरुणा ने सीखा कि कार्यस्थल की राजनीति से डरने के बजाय उसे समझना और उसका सामना करना जरूरी है। उसने अपने काम के साथ–साथ अपने आत्मविश्वास को भी मजबूत किया। उसने यह भी महसूस किया कि महिलाओं को एक–दूसरे का समर्थन करना चाहिए, न कि प्रतिस्पर्धा में एक–दूसरे को कमजोर करना चाहिए।

कुछ समय बाद वरुणा को उसकी मेहनत और नेतृत्व क्षमता के लिए प्रमोशन मिला। यह केवल उसकी पेशेवर सफलता नहीं थी, बल्कि उसकी आत्मसम्मान की जीत भी थी।

सन्नाटे के बीच भी अगर कोई आवाज उठे, तो वह बदलाव की शुरुआत बन सकती है।

हिंदी भाषा

जी जगन मोहन
कनिष्ठ अधीक्षक

<u>హిందీ భాష</u>

హిందీ మా హృదయ స్వరం,
భారత మాత గర్వ కారణం।
పదాల్లో ప్రేమ పరిమళం,
భాషల్లో అది మధుర గానం।

ఉత్తరం నుండి దక్షిణం వరకు,
మనసులను కలిపే సేతువు।
సాహిత్యానికి వెలుగు నిచ్చే,
భారత దేశపు మాణిక్యం।

हिंदी हमारे हृदय की आवाज है,
भारत माता के गर्व का कारण है।
इसके शब्दों में प्रेम की सुगंध है,
भाषाओं में यह मधुर गीत समान है।

उत्तर से लेकर दक्षिण तक,
यह दिलों को जोड़ने वाला सेतु है।
साहित्य को प्रकाश देने वाली,
भारत देश की अनमोल मणि है।

लौटना कितना सुखमय होता है!

उज्जवल प्रकाश
खनन अभियांत्रिकी विभाग

लौटना कितना सुखमय होता है –
जब खेतों से आते किसानों के
पगडंडियों पर नए गीत सुनाए जाता है।
गायों की गोधूलि महक से,
बछड़ों की चहलकदमी, बाड़ों में शोर मचाता है।
तब लौटना कितना सुखमय हो जाता है।।

लौटना कितना सुखमय होता है –
जब विग्रह – विषाद – विप्लव भरे मन को,
उषा – दीप्त स्वप्नों से एक सुंदर स्पर्श होता है।
निशा – निराशा नयनों में बंद
जब हृदय व्यथाओं को तोड़कर,
एक स्फूलिंग स्नेह – शिखा सा जगाता है।
तब लौटना कितना सुखमय हो जाता है।।

लौटना कितना सुखमय होता है –
जब भव में भाव भरे भोर के शोक को,
प्रभाकर की प्रभा प्रस्फुटन से
अंधकार का परासन होता है।
जब जीवन परवश – बन्धन में बंधा हो,
तब सत – संघर्षों की सरासर चोट से
सब जीवन परिमल होता है।
तब लौटना कितना सुखमय होता है।।

लौटना कितना सुखमय होता –
जब खोई पहचान अचानक से ,
पुरखों की स्मृति – सीढ़ियों पर
अपने ही पदचिह्नों से पुनः परिचित हो जाता है।
जब अंतःपतन से अंतःप्रकाश तक,
दीर्घ – संधिपथ की जयगाथा से,
एक पुनर्प्रतिष्ठा बैठ जाता है।
तब लौटना कितना सुखमय हो जाता है।।

लौटना कितना सुखमय होता हैकृ
जब हृदय में टूटी वीणा,
अचानक किसी करुण – परस से,
अनाहत – नाद से खिल उठता है।
जब अंततःअंतर्मन गुहाओं में,
छिपे प्रकाश से, द्वेष – पाप का गिरह खुलकर ,
यथार्थ पुण्य से पूरित जीवन ही सर्वथा रह जाता है।
तब नए जीवन में लौटना कितना सुखमय होता है।।

जब मैं उठूंगा

सब कुछ चला गया होगा,
उठती समुद्र से लम्बी लहरें
अनंत गहराइयों में खो चुकी होगी,
रेत पर पड़ी वो सारी शंखदृसीपियां
लोगों द्वारा उठा लिए गए होंगे।

जब तक मैं उठूंगा,
बसंत अपने आखिरी अंत की तरफ देख रहा होगा,
सारी स्मृतियांदृसपने,
ओश की अंश की भाती बिखर चुके होंगे।

जब तक मैं उठूंगा,
पतझड़ यौवन लिए इतरा रहा होगा,
प्रकृति में लू सुन्नदृसन्नाटा लिए मंडरा रहा होगा,
जंगलों की बेचौनी नगरों तक सुनाया जा रहा होगा।

जब तक मैं उठूंगा,
सड़क किनारे खेलते शरारतें,
आसमान की चादर डाल सो गयें होंगे।
निद्रा में लिपटे शहर,
तूफान से पहले की खामोशी में बदल गया होगा।

जब तक मैं उठूंगा,
संवेदनाओं का सागर ,
संज्ञाशून्य हो चुका होगा।
करुणा की अंतिम बूंद,
क्रूरता की पहली बारिश बन चुकी होगी।

और जब तक मैं उठूंगा,
काल का गाल प्रचंड गति से,
सैकड़ों युगों को निगल चुका होगा।

और तब –
मेरा उठना एक विलंबित अंत,
या भावी आरंभ होगा।
जब तक मैं उठूंगा,
तब क्या शेषदृसंकोच बच पाएगा।
जब तक मैं उठूंगा।।

मेरी तमन्ना

जीशान अहमद
वरिष्ठ सहायक

शिकस्त–ए–रंग–ए–तमन्ना को अर्ज–ए–हाल कहूँ
सुकूत–ए–लब को तकाजा–ए–सद–सवाल कहूँ

हजार रुख तेरे मिलने के हैं न मिलने में
किसे फिराक कहूँ और किसे विसाल कहूँ

मुझे यकीं है कि कुछ भी छुपा नहीं उन से
उन्हें ये जिद कि दिल–ए–मुब्तला का हाल कहूँ

तू बे–मिसाल सही फिर भी दिल को है इसरार
अदा अदा को तिरी आलम–ए–मिसाल कहूँ

मिजाज–ए–महफिल–ए–गीती अगर न बरहम हो
तो रंग–ए–ऐश को गर्द–ए–रुख–ए–मलाल कहूँ

हवा के दोश पे है एक शोला–ए–लरजाँ
कहूँ तो क्या तिरी तहजीब का मआल कहूँ

वो एक ख्वाब जो तामीर आप है अपनी
मैं क्या हकीकत–ए–रानाई–ए–खयाल कहूँ

गजल की बात रहेगी वहीं अगर सौ बार
जवाब–ए–शोखी ओ रानाई–ए–गजाल कहूँ

'जीशान' ये सादगी–ए–इश्क का तकाजा है
कमाल–ए–होश को इख्लास का जवाल कहूँ

विदाई काशी सी

वात्सल्य रघुवंशी
यांत्रिक अभियांत्रिकी विभाग

विदाई मणिकर्णिका जहाँ
शिव से शव की मिलन वहाँ
मोक्ष धाम के कण–कण में
शिव से मिलन,शव से जुदाई
फिर कैसी विदाई कैसी जुदाई

जिसे देखने व्याकुल हो इंद्र
जिसकी प्रतिक्षा में स्वंय शिव
अविमुक्त की नगरी काशी की
मिलन,मोक्ष,जुदाई काशी की
फिर कैसी विदाई हो रही काशी की

इकलौता महाश्मशान कहां
स्वर्ग सा जहाँ हो द्वार वहां
शिव से शव का मिलन कहां
जहाँ अवतार शिव गंग वहां
फिर कैसी विदाई हो रही वहां

कैसी नगरी ये काशी है
माँ सती की विदाई काशी में
मसान की होली काशी में
साधु–संत और वैरागी काशी में
फिर कैसी विदाई हो रहीं काशी में

चिताओं की मेला श्मशान कहां
जलती रहती हो लाश जहाँ
जीवन मृत्यु से पर्चित शहर वहां
मणिकर्णिका घाट हो जहाँ
फिर कैसी विदाई हो रही वहां

जिसके स्थापन में हो स्वंय शिव
जहाँ अवतार हो ज्योतिर्लिंग
जहाँ अर्धनारीश्वर का हो निवास
जहाँ भूतेश्वर करते हो वास
मणिकर्णिका घाट हो जहाँ
ऐसी विदाई हो रहीं वहाँ

हौसलों की उड़ान

विजय मचंक राव शिंदे
भैषजकीय अभियांत्रिकी विभाग

थक के रुकना भी मना है इस सफर की राह में,
हौसलों को जिंदा रखना हर नए प्रयास में।

हार ने जब–जब कहा, "अब लौट चल अपने घर",
जीत ने फुसफुसाया, "दम अभी बाकी है असर।"

जो गिरा है वही उठकर आसमान छू पाएगा,
ख्वाब का सच होना बस हिम्मत से जुड़ जाएगा।

अंधेरों से जो लड़े, वही सवेरा लिख गया,
डर के आगे जो झुका, वह अंधकार बन गया।

खुद पे यकीं रख जरा, हालात बदल जाएँगे,
आज जो काँटे हैं पथ में, कल वही फूल बन जाएँगे।

लकीरों से नहीं चलता मुकद्दर आदमी का,
कर्म से ही रचता है इतिहास जिंदगी का।

चल पड़ा जो अकेला भी, काफिला बन जाएगा,
सच की आग में तपकर ही सोना निखर जाएगा।
ना तूफानों से डर, ना मुश्किलों से हार मान,
हर इम्तिहान के बाद ही मिलती है नई पहचान।

वक्त चाहे कितना भी तुझे आजमाए यहाँ,
सब्र की राह पर चल, मिलेगा तुझे आसमां।

मेहनत की हर बूंद एक दिन रंग लाएगी,
तेरी कहानी ही तेरी पहचान बन जाएगी।

नफरत

आशुतोष कुमार
पदार्थ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग

जल जला नफरत का है, ये आग अब बढ़ने लगा,
राख करने को चला चौतन्य इस देश के,
उड़ चले हैं पंख वाले उठते धुएँ को देख कर,
कुछ अश्क लिए हैं आँखों में, कुछ दर्द लिए हैं सीने में,
कुछ भाग रहें हैं जीने को, कुछ ऐतबार करें हैं करिश्में को,
राख करने को अब सब कुछ आग ये बढ़ने लगा ।

परिवर्तन

रोहित पासवान
धातुकीय अभियांत्रिकी विभाग

क्या मैं परिवर्तक हूँ?
जो परिवर्तन कि पाऊँगा,
जो वर्षों से चली आ रही है गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर,
उन सभी बंधित वर्गों को मुक्ति–दिला पाऊँगा ।

क्या मैं परिवर्तक हूँ?
जो परिवर्तन कर पाऊँगा,
मैं प्रेम करता हूँ ब्राह्मण की पुत्री से,
मेरा तालुकात है दलित वर्गों से,
क्या मैं प्रेम विवाह कर पाऊँगा।

क्या मैं परिवर्तक हूँ ?
जो प्रेम विवाह करके, परिवर्तन कि पाऊँगा,
है समाज मे बहुत–सी सीमाएँ,
उच्च–निन्च कार्य प्रणाली की,
क्या मैं इन सभी निराधार प्रणाली को,
जड़ो से तोड़ पाऊँगा ?

क्या मैं परिवर्तक हूँ?
जो परिवर्तन कि पाऊँगा,
क्या मैं हूँ अपने परिवार का आखिरी चिराग हूँ?
जिसको प्रकाशित करना है अपना पूरा समाज।

क्या मैं परिवर्तक हूँ ?
जो परिवर्तन कि पाऊँगा,
क्या मैं इस आधुनिक वैज्ञानिक युग में,
अपने सपनों को पूरा कर पाऊँगा,
इस मतलबी युग को परोपकारी बना पाऊँगा ।

क्या मैं परिवर्तक हूँ ?
जो परिवर्तन कि पाऊँगा,
जो चली आ रही हैं हजारों सालो से
छुआछूत की दुर्गन्ध जातिप्रणाली को,
क्या मैं इस जाति प्रणाली को तोड़ कि,
सबसे मिल–जुल कर रह पाऊँगा,

क्या मैं परिवर्तक हूँ ?
जो परिवर्तन कि पाऊँगा,
मैं भी हूँ उन सबके जैसा,
क्या मैं साथ बैठ कि भोजनकर पाऊँगा,
मित्रता कर पाऊँगा,
क्या मैं परिवर्तक हूँ ?
जो परिवर्तन कि पाऊँगा।

मेरा राम किसान

नीतिन राय
पीएच–डी स्कालर
सेरामिक इंजीनियरिंग विभाग, बी.एच.यू.

रोज निकाला है धरती से जीवन का आधार
अपनी अपनी बात है लेकिन मेरा राम किसान
वनवासी सा जीवन यापन उसपर है मुस्कान
अंत समय सब काशी जाते ये जाता खलिहान

केवट ने नदी पार कराया पहले पांव पखार
मैंने आपके काज सवारे मेरा सौभाग्य
यह दुर्लभ संवाद जगत में राम की हैं पहचान
मेरे नायक से केवट लेगा ऐवज धन धान
पूजे जाते हैं धरती पर भेद से रंक प्रधान
अपनी अपनी.....

सीता मां की खोज में भटके जाते वन अनजान
हाथ जोड़कर मिले मुनि वानर सबरी हनुमान
वर्षा ऋतु का हरण हुआ है उपज घटी सरकार
ऐसी विनती ले मारा फिरता हर दर दरबार
बेशर जो विनती करता है होता बोता है अपमान
अपनी अपनी.....

बेटे को सरहद भेजा बनने भारत अभिमान
बेटी को आचरण दिए भर दिए भरती प्राण
मात पिता की इच्छा को पूरा करने की ठान
कन्या दान किए आता बाजार में लेकर धान
मुस्किल है सब एक जन्म में करना, कहन असान
अपनी अपनी.....

वन भटकों या खेत में भटकों, धनुष हो या हल धार
मित्र बनाओ रीछ कपि या केचुए खग गोनाथ
स्वर्ण मृगा की चाह में आके पाया है संताप
रावण अमृत नाभ कलश का कौन बताए राज
दुविधा में सुविधा कुछ को है कुछ का अटल विधान
अपनी अपनी.....

सूर्य वंश का तेज हैं दोनों अपने माथे धार
इक मर्यादा को गढ़ता दूजा चलता सम्हाल
संघर्षों के जीवन में हो राम के पूरक आप
नमन तुम्हें है नमन तुम्हें है नमन तुम्हें है आज
वरदोनों में वरदानी जो जन्म मिले इस जात
अपनी अपनी बात है लेकिन मेरा राम किसान

नाकवि

सनातन नाम

राम मेरे राम भगवन
राम मेरे राम भगवन
युग युगों का है सहारा
एक सनातन नाम भगवन

क्लेश कष्टों कामनाओं
से बना जग का किनारा
दीप्त होता जा रहा है
ज्ञान सा अज्ञान सारा
हमको पाना है पराभव
बस तुम्हारा धार भगवन
राम.....

श्वास कि मध्यम ऋचाएं
नाम तेरा ले रही हैं
जिस तरह तुमने पुकारा
था सिया जो खो गईं हैं
इस कुटिल रास्ते पे हमको
भी मिले हनुमान भगवन
राम.....

युद्ध होता जा रहा है
लंक हम पर हस रहा है
इंद्रजीतों के विशिख से
हृद लखन मूर्छा रहा है
दो संजीवन और दशानन
नाभ का हत ज्ञान भगवन
राम.....

छोड़ कर तुमको हमारा
योनियों का वास अब बस
हर जनम में भोगता हूं
रस रहित संसार का रस
मैं थका हारा अकिंचन
खटखटाता द्वार भगवन
राम.....

उदधि मंथन मंदरा से
विष निकलते चित्त धरा से
ज्ञान क्या अज्ञान क्या है
क्या है मानव काम क्या है

वासुकि के किस चलन पर
है सुधा, उद्धार भगवन
राम ....

नाकवि

हे भारत

शक्ति सिंहासन के अधिकारी
ऊर्जा को संचय कर धारी
काल का पहिया घूमने देए
माथ को तेरे चूमने दे
तबतक कर हठ तब तक कर तप
ले शपथ ले शपथ हे भारत!

क्षीर्ण हुआ है एक ही धागा
मत फिर तू नितांत अभागा
भारत ही में प्रकाश छुपा है
प्रश्न जिधर है राह वहां है
तुरपाई के सूत सुई अब
कर प्रश्न कर प्रश्न हे भारत!

संघर्षों में चार डंकनी
मैनाक स्वजन विश्राम बंधनी
मुंहबा सुरसा भ्रम फैलाए
श्रम सिंघी लंकिनी चुराए
बल बुद्धि विद्या सांस जब
साध अब साध अब हे भारत!

ज्वर कंपित क्यों देह तुम्हारा
क्यों दुर्बल हृद अस्त्र उतारा
महासमर के महा पताका
नित्य शाश्वत देही तुम्हारा
धर्म विशिख पुनि बांह भर
युद्ध कर युद्ध कर हे भारत!

नाकवि

तुम विश्वगुरु हो

तुंग हिमालय जिसके उड़ते केश एअघाता
आह्लादित हो षड् ऋतुओं का जाल बिछाता
हिंद महासागर जिसके हैं पांव पखारें
उस वरदानी माता के तेजस लाल तुम्हीं हो
तुम विश्वगुरु हो

डम डम डमरु की ध्वनियों से गुंजित रचना में
रुनझुन रुनझुन पायल की कोमल राग सुहाती
करवट लेकर नींद से जगते नव रमणी की
चंचल चितवन जैसे जग का सुहाग तुम्हीं हो
तुम विश्वगुरु हो

छोटी छोटी बातों पर लड़ना शोभा कैसी
लक्ष्मी कुबेर किसपे हैं इसमें रो गा कैसी
अल्हड़पन फक्कड़पन जिनके पाँव दबाए
उन गुरुओं के अधर सजाएं गीत तुम्हीं हो
तुम विश्वगुरु हो

तैयारी कर लो संघर्षों से भिड़ने की
तैयारी कर लो दृढ़ होकर अब तपने की
अंधकार की छाती में भर दो उजियारा
नव रश्मि दिशा इंगित चिंगारी ताप तुम्ही हो
तुम विश्वगुरु हो

विकल हुए मानव को फिर से राह दिखाओ
चलने में असमर्थ हो उनसे बाह मिलाओ
संभव है अंधों की सेना में काने हो
पर धर्मक्षेत्र गांडीव लिए सौभाग्य तुम्हीं हो
तुम विश्वगुरु हो

सिंघो के दांतो से गणना सिख लिया है
मछली को चंचल आंखों को भेद दिया है
प्रेम को त्याग से त्याग को प्रेम से सिंचने वाले
मृत्यु से जो प्रश्न उठाए, ज्ञान तुम्ही हो
तुम विश्वगुरु हो

संस्कार सुमनों की गूथन संस्कृति से
मर्यादित सौहार्दपूर्ण सभ्यता सजाए
विश्व सुगंधित करती उड़ती संस्कृता में
भ्रमर तुम्ही हो, अमर महा पराग तुम्ही हो
तुम विश्वगुरु हो

नीतिन राय
पीएच–डी स्कालर
सेरामिक इंजीनियरिंग विभाग,
बी.एच.यू.

काशी हिंदू विश्वविद्यालय

सिद्धार्थ श्रीवास्तव
कनिष्ठ सहायक

काशी की धरती पर स्थित काशी हिंदू विश्वविद्यालय सिर्फ एक विश्वविद्यालय ही नहीं बल्कि काशी की आत्मा है।प्राचीन काल से ही शिक्षा का केंद्र रहे काशी की प्रतिष्ठा को बनाए हुए। काशी हिंदू विश्वविद्यालय आज शिक्षा का महत्वपूर्ण शैक्षणिक केंद्र है।

1300 एकड़ में फैले हुआ इस विश्वविद्यालय में आज 6 संस्थान, 14 संकाय और 140 विभाग हैं जहां विश्व की सभी महत्वपूर्ण विषयों की पढ़ाई होती है। इतिहास, राजनीति विज्ञान और विज्ञान से लेके विदेशी भाषाओं के विषय भी यहां उच्च शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जाते हैं। इसके अलावा आईआईएम में आधुनिक चिकित्सा, कृषि संस्थान में कृषि से संबंधित विषय और आईआईटी में तकनीकी शिक्षा पढ़ाये जाने वाले प्रतिष्ठित और महत्वपूर्ण संस्थान भी इसी परिसर में है।

सुविधा की बात करे तो यहां की सेंट्रल लाइब्रेरी में 15 लाख से ज्यादा किताबें हैं। इसके अलावा छात्रों और कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य केंद्र की भी सुविधा उपलब्ध है जिसके माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निवारण कैंपस में ही मिल जाता है ।और इसी कड़ी में सर सुंदरलाल हॉस्पिटल भी इस कैंपस में है जहां यूपी सहित सारे पूर्वांचल से लोग इलाज कराने आते हैं।

पढाई के अलावा हर इंस्टीट्यूट के लिए यहां बड़े मैदान सहित खेल कूद के लिए इनडोर और आउटडोर स्टेडियम भी है। फिजिकल फिटनेस को ध्यान रखते हुए यहां व्यायाम शाला की भी व्यवस्था की गई है।

यह विश्वविद्यालय जहां 30 हजार से ज्यादा स्टूडेंट्स पढ़ते हैं और 65 से ज्यादा हॉस्टल हैं ये अपने आप में ही अजूबा है क्योंकि इस विशाल तथा व्यापक विश्वविद्यालय की स्थापना बड़े ही संघर्षो और लम्बे प्रयासो के बाद हुई है।

आजादी से पहले जब भारत अनेक समस्याओं से गुजर रहा था और शिक्षा के पैमानों पर काफी पीछे रह चुका था तब एक युगपुरुष पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने एक सपना देखा था जो कि न केवल दूरदर्शी था बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए वरदान होने वाला था।

मालवीय जी ने 1905 में अपना घर छोड़ ये संकल्प लिया कि बनारस में एक विश्वविद्यालय की स्थापना की

जाएगी और उसी प्रयास में जुट गए। अंग्रेज चाहते थे कि भारत वासियो को केवल उतनी ही पढाई कराई जाए जिससे कि वो केवल अंग्रेजों के बही खाता का काम देख सके। इसके अलावा अंग्रेजों ने अंग्रेजी और लैटिन विषयों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, ताकि भारतीयों को 'भूरा रंग लेकिन अंग्रेजी खून' जैसा बनाए रखे और भारत में हिंदी भाषाएं और अन्य भाषाओं को भी नजरंदाज ही किया। साथ ही विज्ञान और अन्य आधुनिक विषयों पर भी कम धन आवंटित किया गया। मालवीय जी ने इस रणनीति को बहुत पहले ही भाप लिया था और इसलिए विश्वविद्यालय बनाना मे पूरा जोर लगा दिया लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें रोकने का भरपूर प्रयास किया। उनके प्रस्ताव को कई बार नजरंदाज कर निराश किया। अंत में अंग्रेजों ने यह चुनौती देकर विश्व विद्यालय बनाने की अनुमति प्रदान करने का वादा किया कि अगर वो पर्याप्त पैसा जुटा लेते हैं तो अनुमति मिल सकती है।

एक बड़ा विश्वविद्यालय स्थापित करने के लिए मालवीय जी ने निर्णय लिया कि वो भिक्षा मांग कर धन इकट्ठा करेंगे और इस उद्देश्य से भारत भ्रमण किया ताकि धन इकट्ठा हो सके। लोगो के ताने और अपमानो के बावजूद एक असम्भव प्रयास में श्जुटे मालवीय जी को धीरे–धीरे सफलता मिलने लगी। उनकी कर्मठता और दृढ़ संकल्प को देख काफी लोग आगे आये। इनमे ३ महत्वपूर्ण लोगो का नाम आता है, एक दरभंगा के महाराजा रामेश्वर सिंह जिन्होनें भारी मात्रा में धनराशी दान किया, दूसरे काशी नरेश प्रभु नारायण सिंह जिन्होनें विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए जमीन दान किया और तीसरे सर सुंदर लाल जोकि मालवीय जी के साथ विश्वविद्यालय स्थापना के कार्यों में लगे रहे और बाद में काशी हिंदू विश्वविद्यालय के पहले वाइस चांसलर रहे।

इसके अलावा देशभर के लोगो ने अपनी क्षमता अनुसार दान के कार्यों में आगे आके यूनिवर्सिटी बनाने में अपना योगदान दिया। कहा जाता है कि मुजफ्फरपुर की एक भिखारी ने अपने पूरे दिन की भिक्षा को दान कर दिया था। दान संग्रह में काई जगह मालवीय जी को अपमान भी मिला जैसे कि हैदराबाद के निजाम ने मालवीय जी को अपनी जूती दे दी थी लेकिन मालवीय जी ने यहां पर अपनी बुद्धिमाता दिखाकर जूती को नीलामी कर पैसे जुटाए। इस तरह अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी मालवीय जी और अन्य भारतवासियों ने काशी हिंदू विश्वविद्यालय की स्थापना में अपना योगदान दिया और ये सिद्ध किया की

"हजार बर्क गिरे लाख आँधियाँ उठे
वो फूल खिल के रहेंगे जो खिलने वाले हैं"

इसकी स्थापना के बाद यहां के ताम्रपत्र में विश्वविद्यालय के लिए दान देने वाले किसी भी राजा का नाम अंकित नहीं किया गया है बल्कि केवल उस राज्य का नाम ही अंकित है जैसे कि मेवाड़, काशी, कपूरथला आदि और इसकी स्थापना का श्रेय भगवान को दिया गया है। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना में शामिल लोग कितने आदर्शवादी थे और विश्व विद्यालय का इतिहास कितना गौरवशाली है।

आज काशी हिंदू विश्वविद्यालय भारत सरकार द्वारा घोषित भारत के ८ सार्वजनिक संस्थानों में से एक है जिसे इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस में शामिल किया गया है। साथ ही ये भारत के उन 12वे विश्वविद्यालय में से एक है जो ब्रिक्स विश्वविद्यालय लीग का हिस्सा है। आजादी से पहले ही प्रौद्योगिकी के महत्व को देखते हुए 1919में बनारस इंजीनियरिंग कॉलेज की स्थापना की थी जो आज आईआईटी बन चुका है और भारत को आधुनिक विज्ञान में अग्रणी बनाने की राह पर है।

यहाँ तक कि महिला शिक्षा को ध्यान में रखते हुए 1930 के दशक में ही महिला महाविद्यालय की स्थापना कर दी गई थी। और इन सभी बातों से ये सिद्ध होता है कि ये विश्वविद्यालय सच में काशी की आत्मा जैसी है जो काशी के सदियो पुराने ज्ञान को आज आगे बढ़ाने में लगा हुआ है।

मालवीय जी साहित विश्वविद्यालय से 7 भारत रत्न निकले हैं और इसके अलावा हर क्षेत्र में यहां के छात्रों ने अपना परचम लहराया है और इसका कुलगीत ही इसका असली परिचय देता है :

"मधुर मनोहर अतीव सुन्दर
यह सर्वविद्या की राजधानी"

काशी

गुंजित जैन
पूर्व छात्र,
इलेक्ट्रॉनिक्स अभियांत्रिकी : 2026

दिल के सारे तार पिरोना, काशी ही कहलाएगा,
चुन चुन मोती हार पिरोना, काशी ही कहलाएगा।

रस्तों, गलियों, ओसारों में, मुस्काता जीवन होगा,
मौज मस्तियाँ बनी रहेंगी, अद्‌भुत फक्कड़पन होगा,
प्रेम–भाव के सर–सर झोंके, जब तन को छू जाएंगे,
पुलकित पवन पुकार पिरोना, काशी ही कहलाएगा।

देख आरती घाट घाट की, गंगामय तन–मन होगा,
हर–हर महादेव के स्वर से, काशी में कंपन होगा,
शिव शंकर की जग में व्यापी, बिखरी खुली जटाओं में,
माँ गंगा की धार पिरोना, काशी ही कहलाएगा।

चित्रों के इस विस्तृत जग में भरता रँग नूतन होगा,
घाट–घाट पर बैठे बैठे, कविता का मंथन होगा,
कहीं दिखेगा सुंदर गायन, कहीं मनोरम नृत्य दिखे,
कला कला का सार पिरोना, काशी ही कहलाएगा।

आज का युग और युवा पीढ़ी की सोच

जीशान अहमद
आउटसोर्स कर्मचारी

आज का युग परिवर्तन, तकनीक और तीव्र प्रतिस्पर्धा का युग है। इस दौर में युवा वर्ग की सोच में भी व्यापक बदलाव देखने को मिल रहा है। आज का युवा केवल परंपरागत धारणाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह नए विचारों, नई तकनीकों और नए अवसरों को अपनाने के लिए पूरी तरह तैयार है। वह अपने जीवन को बेहतर बनाने के साथ–साथ समाज और देश के विकास में भी सक्रिय भूमिका निभाना चाहता है।

वर्तमान समय में तकनीकी क्रांति ने युवाओं की सोच को सबसे अधिक प्रभावित किया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और सोशल मीडिया के माध्यम से युवा विश्व के किसी भी कोने की जानकारी कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर लेते हैं। इससे उनकी सोच अधिक खुली, तार्किक और आधुनिक हुई है। अब वे किसी भी विषय पर अपनी राय रखते हैं और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहते हैं। शिक्षा के बढ़ते स्तर ने भी युवाओं को आत्मविश्वासी और स्वतंत्र बनाया है। आज के युवा की सोच में एक और महत्वपूर्ण परिवर्तन यह देखने को मिलता है।कि वे अब अपने जीवन के निर्णय स्वयं लेने में अधिक विश्वास रखने लगे हैं। पहले जहां करियर, विवाह और जीवनशैली से जुड़े फैसलों में परिवार की भूमिका प्रमुख होती थी, वहीं अब युवा अपनी रुचियों, क्षमताओं और सपनों के आधार पर निर्णय लेना चाहते हैं। वे पारंपरिक रास्तों के बजाय अपने जुनून (पैशन) को प्राथमिकता देते हैं। उदाहरण के तौर पर, जहां पहले डॉक्टर, इंजीनियर या सरकारी नौकरी को ही सफलता का प्रतीक माना जाता था, वहीं अब युवा संगीत, खेल, अभिनय, डिजिटल मार्केटिंग, फोटोग्राफी और अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में भी अपना भविष्य बनाने का साहस दिखा रहे हैं। यह बदलाव दर्शाता है कि आज का युवा जोखिम लेने से नहीं डरता और अपनी अलग पहचान बनाने की इच्छा रखता है। इसके साथ ही, युवाओं में समय के मूल्य को समझने की प्रवृत्ति भी विकसित हो रही है। वे यह समझने लगे हैं कि सफलता केवल बड़े सपने देखने से नहीं मिलती, बल्कि उसके लिए निरंतर मेहनत, अनुशासन और धैर्य की आवश्यकता होती है। हालांकि, कुछ मामलों में जल्दी सफलता पाने की चाह उन्हें अधीर बना देती है, लेकिन जागरूक युवा इस बात को समझते हैं कि असफलता भी सफलता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। वे अपनी गलतियों से सीखते हैं और आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं। यह दृष्टिकोण उन्हें मानसिक रूप से मजबूत बनाता है। आज का युवा स्वास्थ्य के प्रति भी पहले की अपेक्षा अधिक जागरूक हुआ है। वह केवल शारीरिक फिटनेस ही नहीं, बल्कि मानसिक संतुलन को भी महत्व देता है। जिम, योग, ध्यान और खेल–कूद जैसी गतिविधियों में उनकी भागीदारी बढ़ी है। वे यह समझने लगे हैं कि स्वस्थ शरीर और शांत मन के बिना किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करना कठिन है। इसके साथ ही, खान–पान की आदतों में भी बदलाव देखने को मिल रहा है, जहां युवा जंक फूड के बजाय हेल्दी डाइट की ओर आकर्षित हो रहे हैं। डिजिटल युग ने युवाओं को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी दी है। आज हर युवा अपने विचारों को सोशल मीडिया, ब्लॉग या वीडियो के माध्यम से लाखों लोगों तक पहुंचा सकता है। इससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है और वे समाज के मुद्दों पर खुलकर अपनी बात रखने लगे हैं। हालांकि, इस स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी होती है। कई बार बिना पूरी जानकारी के राय देना या गलत जानकारी फैलाना समाज के लिए हानिकारक हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि युवा अपनी अभिव्यक्ति का उपयोग सोच–समझकर और जिम्मेदारी के साथ करें। इसके अलावा, युवाओं में सहयोग (कोलैबोरेशन) की भावना भी बढ़ी है। वे टीमवर्क में विश्वास रखते हैं, और एक–दूसरे के साथ मिलकर काम करना पसंद करते हैं। स्टार्टअप संस्कृति इसका एक बड़ा उदाहरण है, जहां कई युवा मिलकर नए–नए विचारों पर काम कर रहे हैं और कुछ नया करने की कोशिश कर रहे हैं। यह सहयोगात्मक सोच न केवल उनके व्यक्तिगत विकास में सहायक है, बल्कि देश की प्रगति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। यह कहा जा सकता है कि आज का युवा केवल बदलाव का दर्शक नहीं, बल्कि

उसका सक्रिय भागीदार है। वह अपने विचारों, कार्यों और निर्णयों के माध्यम से समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। यदि वह अपने मूल्यों, अनुशासन और सकारात्मक सोच को बनाए रखे, तो वह निश्चित रूप से एक उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकता है। आज का युवा आत्मनिर्भर बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। वह केवल सरकारी नौकरी पर निर्भर नहीं रहना चाहता, बल्कि निजी क्षेत्र, स्टार्टअप, फ्रीलांसिंग और उद्यमिता की ओर भी बढ़ रहा है। 'आत्मनिर्भर भारत' जैसे अभियानों ने भी युवाओं को प्रेरित किया है कि वे खुद का व्यवसाय शुरू करें और दूसरों को भी रोजगार दें। यह सोच देश की आर्थिक प्रगति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।युवा वर्ग में सामाजिक जागरूकता भी पहले की अपेक्षा अधिक बढ़ी है। वे पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर खुलकर अपनी बात रखते हैं। कई युवा सामाजिक कार्यों में भाग लेते हैं और जरूरतमंदों की मदद के लिए आगे आते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि आज का युवा केवल अपने भविष्य के बारे में ही नहीं सोचता, बल्कि समाज के प्रति भी अपनी जिम्मेदारी समझता है। हालांकि, आधुनिक युग के साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। आज के युवा पर सफलता पाने का अत्यधिक दबाव है। वह जल्दी सफलता हासिल करना चाहता है, जिसके कारण कई बार वह अधीर हो जाता है। सोशल मीडिया पर दूसरों की सफलता देखकर तुलना की भावना भी बढ़ती है, जिससे मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। इसके अलावा, समय का सही प्रबंधन न कर पाना भी एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। इसके साथ ही, कुछ युवा भौतिकवादी सोच की ओर अधिक झुकाव रखते हैं। वे सफलता को केवल धन और प्रसिद्धि से जोड़कर देखते हैं, जिससे उनके जीवन के मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक और सांस्कृतिक मूल्यों से दूरी भी एक चिंता का विषय है। ऐसे में जरूरी है कि युवा आधुनिकता के साथ–साथ अपने संस्कारों और परंपराओं को भी बनाए रखें। परिवार और समाज की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है। माता–पिता और शिक्षक युवाओं को सही मार्गदर्शन देकर उनकी सोच को सकारात्मक दिशा दे सकते हैं। युवाओं को केवल रोकने या टोकने के बजाय उन्हें समझना और उनके विचारों का सम्मान करना आवश्यक है। संवाद और सहयोग के माध्यम से ही युवा अपनी क्षमताओं का सही उपयोग कर सकते हैं। आज के युवा की सोच में वैश्विक दृष्टिकोण भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। पहले जहां युवाओं का दायरा सीमित हुआ करता था, वहीं आज वे दुनिया के विभिन्न देशों की संस्कृति, शिक्षा और कार्यप्रणाली को समझने लगे हैं। वे विदेशों में पढ़ाई, नौकरी और व्यापार के अवसरों की तलाश करते हैं, साथ ही अपने देश में भी वैश्विक स्तर की सोच और कार्यशैली अपनाने का प्रयास करते हैं। इस वैश्विक अनुभव ने उनके आत्मविश्वास को बढ़ाया है और उन्हें प्रतिस्पर्धा के लिए अधिक सक्षम बनाया है। इसके अलावा, आज का युवा नवाचार और रचनात्मकता की ओर भी तेजी से बढ़ रहा है। वह पारंपरिक तरीकों से हटकर नए–नए प्रयोग करने में विश्वास रखता है। डिजिटल मंचों जैसे यूट्यूब, ब्लॉग लेखन और कंटेंट क्रिएशन के माध्यम से युवा अपनी प्रतिभा को दुनिया के सामने ला रहे हैं। इससे न केवल उन्हें पहचान मिल रही है, बल्कि यह उनके लिए आय का एक नया स्रोत भी बनता जा रहा है। यह बदलाव दर्शाता है कि युवा अब केवल नौकरी करने वाले नहीं, बल्कि अवसर बनाने वाले भी बन रहे हैं। राजनीतिक और सामाजिक स्तर पर भी युवाओं की भागीदारी बढ़ी है। वे अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं और देश के महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपनी राय खुलकर रखते हैं। मतदान से लेकर सामाजिक आंदोलनों तक, उनकी सक्रियता यह दर्शाती है कि वे देश के भविष्य को लेकर गंभीर हैं। हालांकि, कभी–कभी जानकारी की अधिकता और गलत सूचनाओं (भ्रामक खबरों) के कारण भ्रम की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है, जिससे बचने के लिए युवाओं को विवेकपूर्ण सोच अपनानी आवश्यक है। मानसिक स्वास्थ्य भी आज के युवा के लिए एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। प्रतिस्पर्धा, करियर का दबाव और सामाजिक अपेक्षाओं के कारण कई युवा तनाव और चिंता का सामना कर रहे हैं। ऐसे में जरूरी है कि वे अपने मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें, समय–समय पर विश्राम करें और सकारात्मक गतिविधियों में भाग लें। योग, ध्यान और खेल जैसी गतिविधियां उनके जीवन में संतुलन

बनाए रखने में सहायक हो सकती हैं। आज के समय में 'एआई' ने भी युवा पीढ़ी की सोच और कार्यशैली को गहराई से प्रभावित किया है। एआई तकनीक ने शिक्षा, रोजगार और रचनात्मक कार्यों के क्षेत्र में नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। आज का युवा 'एआई टूल्स' के माध्यम से पढ़ाई को आसान बना रहा है, नई–नई स्किल्स सीख रहा है और अपने कार्यों को अधिक तेज और प्रभावी ढंग से पूरा कर पा रहा है। कंटेंट क्रिएशन, ग्राफिक डिजाइन, प्रोग्रामिंग और रिसर्च जैसे क्षेत्रों में एआई युवाओं के लिए एक मजबूत सहायक बनकर उभरा है। हालांकि, 'एआई' का उपयोग जितना लाभकारी है, उसका गलत उपयोग उतना ही हानिकारक भी हो सकता है। कुछ युवा 'एआई' पर अत्यधिक निर्भर हो रहे हैं, जिससे उनकी स्वयं सोचने और समझने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। पढ़ाई में बिना समझे एआई से उत्तर लेना, परीक्षा या कार्य में अनुचित तरीके से इसका इस्तेमाल करना उनकी ईमानदारी और सीखने की प्रक्रिया को कमजोर कर सकता है। इसके अलावा, फर्जी जानकारी, डीपफेक और साइबर अपराध जैसे खतरे भी 'एआई' के दुरुपयोग से बढ़ रहे हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि युवा 'एआई' का उपयोग एक सहायक उपकरण के रूप में करें, न कि उस पर पूरी तरह निर्भर हो जाएं। उन्हें अपनी रचनात्मकता, तर्कशक्ति और मौलिकता को बनाए रखते हुए 'एआई' का संतुलित और जिम्मेदार उपयोग करना चाहिए। शिक्षा संस्थानों और समाज की भी जिम्मेदारी है कि वे युवाओं को 'एआई' के सही और नैतिक उपयोग के बारे में जागरूक करें। आज का युवा नई ऊर्जा, नए विचार और नए सपनों से भरा हुआ है। उसमें कुछ अलग करने का जुनून है और वह अपने दम पर पहचान बनाना चाहता है। यदि उसे सही दिशा और अवसर मिले, तो वह न केवल अपने जीवन को सफल बना सकता है, बल्कि देश को भी प्रगति के पथ पर आगे ले जा सकता है। अंततः कहा जा सकता है कि आज का युग युवाओं के लिए संभावनाओं से भरा हुआ है। यह समय उन्हें अपनी प्रतिभा दिखाने और नए कीर्तिमान स्थापित करने का अवसर देता है। आवश्यकता इस बात की है कि युवा अपनी सोच को सकारात्मक, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण बनाए रखें। जब युवा सही दिशा में आगे बढ़ेंगे, तभी एक सशक्त और समृद्ध राष्ट्र का निर्माण संभव होगा।

काशी का माहात्म्य

शशांक पाठक
(संयोजक)

इस जगत में कोई भी जीवित या अजीवित वस्तु शाश्वत नहीं है। यदि जगत एक मिथ्या है तो क्या धार्मिक एवं पौराणिक नगरी काशी का अस्तित्व इसी मिथ्यारूप में विराजमान है ? ऐसा नहीं है क्योंकि काशी मोक्ष की नागरी है। यह अति प्राचीन जीवंत है, अविनाशी है और वास्तविक रूप में अपने अस्तित्व को सँजोए हुए है। इसका नाम वाराणसी है, काशी है और बनारस भी इसी का नाम है। बनारस में बाबा विश्वनाथ ज्योतिर्लिंग के रूप में विराजमान हैं ।

गंगा तरंग रमणीय जटाकलापम
गौरी निरंतर विभूषित वामभागम
नारायण प्रियमनंग मदापहारम
वाराणसी पुर पतिम भज विश्वनाथम ।।

इसके संपूर्णता का प्रमाण प्रत्यक्ष रूप में यहाँ निवास किए हुए साधु, संतो और उनकी कृतियों से जाना जा सकता है, इसे महसूस किया जा सकता है। जगतगुरु शंकरचार्य ने समस्त जगत में प्राणी मात्र को एक पिंड स्वरूप माना है। मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक और मृत्यु के उपरांत इसी पिंड रूप में विद्यमान रहता है । यहाँ मृत्यु को उत्सव के रूप में मनाया जाता है और सबकी पूजा भी इसी रूप में की जाती है चाहे वह गोचर हो या अगोचर हो। कवि भर्तृहरी ने शब्दों को ब्रह्म स्वरूप माना है और यहीं शब्द जब मंत्रो में गुथकर कंठ से उच्चरित होते हैं तो पूरा वातावरण भक्ति और आस्था में गोते लगाने लगता है। काशी शहर भक्ति भाव से अभिभूत है यहाँ के मंदिरों और मठों में संतों की वाणी और वेदों के पाठ गुंजन होते हैं। यहाँ जगतगुरु आदि शंकराचार्य, देवरहा बाबा, बाबा किनाराम, तैलंग स्वामी, करपात्री जी महाराज, तुलसीदास, कबीरदास, रविदास, योगिराज श्यामाचरण लाहिड़ी महाशय, महाकवि भारती जैसे संतों, योगियों और कवियों ने आकर प्रवास किया और अपनी कर्मभूमि मानते हुए यहीं उनका निवास स्थान बन गया। यहाँ कंकड़ कंकड़ में भोलेनाथ शंकर विराजमान हैं और द्वादश ज्योतिर्लिंग के प्रतिरूप जगह जगह विद्यमान है। यहाँ जो आता है वह शिवमय हो जाता है । यह ज्ञान, आध्यात्म और प्रकाश की नगरी है– "काश्यां हि काश्यते काशी, काशी सर्वप्रकाशिका, सा काशी विदिता येन, तेन प्राप्ता हि काशिका।" जिसे इस तथ्य का ज्ञान हो गया वो सही अर्थों में काशी का हो जाता है। कबीरदास और रविदास जी की वाणी का वाचन होता रहता है तथा लगभग हर घर में रामचरितमानस व गीता है।

उस काशी में कौन नहीं बसना चाहेगा, जहाँ मुक्ति है, ज्ञान है, पापों का नाश हो जाता है और शंभू भवानी बसते हों ।

मुक्ति जन्म महि जानि
ज्ञान खान अघ हानि कर
जहँ बस संभु भवानी सो
कासी सेइअ कस न ।।

–रामचरितमानस

काशी में हिंदी साहित्य की सबसे प्राचीन संस्था नागरीप्रचारिणी सभा (स्थापना– 1893) है। यहाँ शब्द गढ़े जाते हैं। आधुनिक हिंदी खड़ी बोली यहीं पली बड़ी। माँ गंगा का पवित्र दर्शन और आरती तथा घाट अपने अपने विशिष्टता को लिए हुए मठों और आश्रमों से शोभायमान हैं। काशी के कोतवाल स्वयं बाबा काल भैरव तथा दक्षिण में शिक्षा का सबसे बड़ा केंद्र बिन्दु काशी हिन्दू विश्वविद्यालय है। भगवान बुद्ध की तपस्थली सारनाथ एक बौद्ध पर्यटन स्थल के रूप में सुविख्यात है। मंदिरों के इस शहर की कोई अपनी बहुत बड़ी इच्छा नहीं रहती, जो मिला इस शहर ने ग्रहण किया और जो बाहर से आया उन्हें उतम स्थान दिया है। बनारस की साड़ी, पान, कचौड़ी जलेबी और अनेक विविधता की मिठाइयाँ मनोहर हैं। परंतु यह काशी को जानने और समझने में उतनी सहयोगी नहीं है जितनी की इस शहर के गूढ़ रहस्य को जानना और समझना है। देशी या विदेशी पर्यटक हरिश्चंद्र घाट तथा मणिकर्णिका घाट का दृश्य घंटो बैठकर देखते रहते हैं, जहाँ सुंदर काया, धन संपत्ति, वैभव और अभिमान सब जलकर एक दिन भस्म हो जाता है। इसी हरिश्चंद्र घाट के पास कामकोटिश्वर मंदिर की स्थापना आदिशंकराचार्य ने की और दक्षिण के महाकवि भारती का निवास स्थल है। यह माहात्म्य ही है कि जो यहाँ पर आया वह काशी में बस गया।

29 जून 2026 का महत्व

मान्यता के अनुसार संत कबीर दास जी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा के दिन काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ था। जिसके उपलक्ष्य में इस दिन 'कबीर प्राकट्य दिवस' के रूप में मनाया जाता है। 29 जून 2026 को ज्येष्ठ शुक्ल पक्षा पूर्णिमा है। इस दिन पूरे देश में हिंदी साहित्य के महान कवि एवं संत कबीर दास की जयन्ती मनायी जायेगी।

29 जून 2026 को ज्येष्ठ शुक्ल पक्षा पूर्णिमा के अवसर पर स्नान, दान, व्रत और पूजा–पाठ का अत्यंत पावन दिवस है।

29 जून 2026 को भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (का.हि.वि.) वाराणसी अपना 14वाँ 'संस्थान दिवस' बड़े हर्षोल्लास के साथ मना रहा है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), वाराणसी
विषय : ''दो दिवसीय तकनीकी हिंदी कार्यशाला''
(दिनांक : 09–10 मार्च, 2026)

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), वाराणसी में "दो दिवसीय तकनीकी हिंदी कार्यशाला" का आयोजन दिनांक 09–10, मार्च 2026 को ए.बी.एल.टी.– 04 में किया गया। उक्त तकनीकी कार्यशाला के प्रशिक्षक एवं विशेषज्ञ डॉ. श्याम सुंदर कथूरिया, निदेशक, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली थे। इस दो दिवसीय तकनीकी कार्यशाला का उद्घाटन 09 मार्च, 2026 को पूर्वाह्न 10.30 बजे पं0 मदन मोहन मालवीय जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुआ। डॉ. श्याम सुंदर कथूरिया जी ने दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की तथा यह बताया कि दो दिन के प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के लिए भारत सरकार की विभिन्न सॉफ्टवेयर, टूल, योजनाओं एवं एमएस वर्ड पर हिंदी में कार्य, वाइस टाइपिंग, शब्दकोश, भारत सरकार की ई–ऑफिस तथा राजभाषा क्रियान्वयन, पत्राचार तथा टिप्पण लेखन की विस्तृत जानकारी दी जाएगी। कार्यशाला की अध्यक्षता संस्थान के कुलसचिव श्री सुमित कुमार बिस्वास ने किया। उप कुलसचिव (राजभाषा) डॉ. अमित कुमार सिंह जी ने सभी का स्वागत किया तथा हिंदी कार्यशाला के बारे में बताया । कुलसचिव महोदय ने कार्यशाला की उपयोगिता के बारे में बताया तथा श्री शशांक पाठक, हिंदी अनुवादक ने श्याम सुंदर कथूरिया जी के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। संस्थान से कुल उन्तालीस (39) अधिकारियोंध्कर्मचारियों द्वारा सहभागिता की गई। कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु दो दिवसीय तकनीकी कार्यशाला का विवरण इस प्रकार है –

1) प्रथम दिवस (दिनांक 09.03.2026)– दो दिवसीय तकनीकी कार्यशाला के पहले दिन प्रशिक्षक महोदय ने कंप्यूटर पर हिंदी कुंजीपटल सक्रिय करना, फोनेटिक की–बोर्ड के माध्यम से समस्त 22 भारतीय भाषाओं में टाइपिंग, हिंदी के विभिन्न यूनिकोड फॉन्ट की जानकारी, एमएस वर्ड में अनुवाद कार्य, मोबाइल के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य, किसी भी डोक्यूमेंट को टेक्स्ट रूप में बदलने की जानकारी दी ।

   क) कंप्यूटर में इनस्क्रिप्ट कुंजीपटल सक्रिय करना : श्री श्याम सुंदर कथूरिया ने बताया कि सभी कंप्यूटर में पहले से ही सभी भाषाओं के कुंजीपटल मौजूद होते हैं, केवल इसे सक्रिय करने की आवश्यकता होती है। जो भाषा उपलब्ध न हों, उसे माइक्रोसॉफ्ट के bhashaindia.com से इंस्टाल करके निम्नलिखित माध्यम से सक्रिय किया जा सकता है– Start & Setting & Time & Language & Language & Add a Language डेस्कटॉप पर OSK (On Screen Keyboard) के माध्यम से हम सीधे स्क्रीन पर की–बोर्ड का प्रयोग करके 22 भारतीय भाषाओं में टाइप कर सकते है, जिसके लिए उस भाषा के की–बोर्ड को सक्रिय करना होगा । कंप्यूटर में कुल पाँच यूनिकोड हिंदी फॉन्ट जैसे – मंगल, उत्साह, कोकिला, एरियल, अपराजिता हैं, जिसमें टाइप करने पर ये सभी जगह सपोर्ट करते हैं। प्रोजेक्टर के माध्यम से इसका अभ्यास भी करवाया गया।

   ख) एमएस वर्ड में अनुवाद कार्य व बोलकर टाइप करना : एमएस वर्ड में अनुवाद का फीचर बहुत पहले से मौजूद है। इसके लिए निम्नलिखित प्रक्रिया है, जिसके अंतर्गत अंग्रेजी से हिंदी एवं हिंदी से अंग्रेजी दोनों में अनुवाद कर सकते हैं।

Review & Translate & Translate Document

वहीं बोलकर टाइप करने के लिए निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाएंगें–

Start & Settings & Privacy & Security& Speech on

Windows + H (Press) & Microphone On

ग) मोबाइल के माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य : प्रशिक्षक महोदय ने मोबाइल के माध्यम से ऑफिस के कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने की जानकारी दी। इसके लिए मोबाइल में Play Store ls G & board की–बोर्ड इनस्टाल करना होगा। तत्पश्चात मोबाइल में ई–मेल लॉगिन करके Google docs खोलेंगे। इसमें टाइप करने वाले विषय–वस्तु का एक फाइल बनाकर वाइस टाइपिंग के विकल्प का चयन करके हिंदी में टाइप कर सकते हैं जो सीधे हमारे ऑफिस के सिस्टम पर टाइप होगा। इसके अलावा किसी भी दस्तावेज को टेक्स्ट रूप में बदलने के लिए गूगल के लेंस फीचर का प्रयोग करेंगे । जिसमें अपेक्षित दस्तावेज को अपलोड करे बिना किसी स्कैनर के प्रयोग से टेक्स्ट रूप में प्राप्त कर सकते हैं ।

घ) ई–ऑफिस – कथूरिया जी ने भारत सरकार द्वारा विकसित कार्यालय में इलेक्ट्रोनिक माध्यम से कार्य करने की पद्धति (ई–ऑफिस) के बारे में सभी को बताया। ई–ऑफिस पर कर्मचारी अपना लॉगिन करके कार्य करता है तथा इसे कहीं पर भी सुगमता से हैंडील कर सकता है। इससे कार्यालय में सहायक टिप्पण या पत्र का प्रारूप लिखकर आगे बढ़ाता है जिसका ट्रेस भी हो जाता है। इसमें फ्लैगिंग की भी व्यवस्था है।

2) द्वितीय दिवस (दिनांक 10.03.2026) : दो दिवसीय तकनीकी कार्यशाला के दूसरे दिन निदेशक महोदय ने भारत सरकार के विभिन्न एप्लिकेशन टूल जैसे : लीला (LILA), हिंदी शब्द सिंधु, कंठस्थ 2.व (अनुवाद सारथी), राजभाषा अधिनियमधनियम (1963, 1976), संवैधानिक प्रावधान की विस्तृत जानकारी प्रदान की ।

क) लीला (LILA)– Learn Indian Language Through Artificial Intelligence – राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय एवं सी–डैक, पुणे के माध्यम से विकसित लीला एप्लिकेशन हिन्दी सीखने के लिए एक स्वयं शिक्षण पैकेज है । इसे प्ले–स्टोर पर Lila Rajbhasha के नाम से डाउनलोड किया जाता है। जिसमें प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तीन शिक्षण पैकेज है। इस एप के माध्यम से प्राथमिक स्तर से माध्यमिक स्तर तक के हिन्दी का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है ।

ख) हिंदी शब्द सिंधु : संस्करण 2 (हिंदी शब्दकोश) – हिंदी शब्द सिंधु एक बृहत् शब्दकोश है, जिसमें आयुर्वेद, खेलकूद, अन्तरिक्ष, विज्ञान, मानविकी के शब्द समाहित हैं। इसमें हिंदी एवं इसकी उप भाषाएँ तथा अन्य भारतीय भाषाओं के शब्द भी समाविष्ट है। यह पूर्णतया डिजिटल है ।

ग) कंठस्थ 2. व (अनुवाद सारथी)– ट्रांसलेशन स्मृति पर आधारित यह सिस्टम राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा विकसित है। इस सिस्टम के माध्यम से अंग्रेजी से हिंदी तथा हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद संभव है। ट्रांलेशन मेमोरी वस्तुतः एक डेटाबेस है, जिसमें स्रोत भाषा (source language) के वाक्यों एवं लक्षित भाषा (Target language) में वाक्यों के अनुवादित रूप को एक साथ रखा जाता है । यदि अनुवाद की नई फाइल का वाक्य टी.एम. के डेटाबेस से पूर्णतः अथवा आंशिक रूप से मिलता है तो यह सिस्टम उस वाक्य के अनुवाद को टी.एम. से लाता है ।

घ) पत्र तथा टिप्पण लेखन – विशेषज्ञ महोदय ने शासकीय पत्र, अर्ध शासकीय पत्र तथा पत्र में सम्बोधन, विषय इत्यादि के लिखने के तरीकों के बारे में जानकारी दी । उन्होंने टिप्पण लेखन के तरीकों के बारे में भी बताया जोकि संक्षिप्त, सारगर्भित होनी चाहिए ।

संस्थान के उप कुलसचिव (राजभाषा) ने धन्यवाद ज्ञापन किया एवं राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से प्रशिक्षक के रूप में आए डॉ. श्याम सुंदर कथूरिया जी को संस्थान के कर्मचारियों को दो दिन का तकनीकी प्रशिक्षण देने के लिए विशेष धन्यवाद दिया । संस्थान के राजभाषा प्रकोष्ठ की ओर से आचार्य प्रभारी (प्रशासन) आचार्य रंजीत महंती जी ने प्रशिक्षक महोदय को अंगवस्त्रम एवं स्मृतिचिह्न प्रदान करके स्वागत किया ।

कवि सम्मेलन (17 जनवरी, 2026)

एक न्यायाधीश के रूप में एलएलएम/एल.एल.एम. ऐज अ जज

(LLM & as & a & Judge)

जसविंदर सिंह

वरिष्ठ सहायक

एआई का नया डिजिटल जज : एल.एल.एम. ऐज अ जज (LLM & as & a & Judge) क्या है और यह कैसे काम करता है?

जैसे–जैसे हम चौटबॉट्स, एआई असिस्टेंट और विभिन्न प्रकार के जनरेटिव एआई प्रोडक्ट्स का निर्माण कर रहे हैं, वैसे–वैसे यह जांचना कठिन होता जा रहा है कि एआई का जवाब सही है या गलत। इंसानों द्वारा हर एक उत्तर को पढ़ना और स्कोर देना बेहद धीमा और खर्चीला होता है। इसी समस्या को हल करने के लिए एल. एल.एम. ऐज अ जज (LLM & as & a & Judge) का जन्म हुआ है।

1. यह कैसे काम करता है? (How it Works) :

इस प्रक्रिया में हम एक अधिक शक्तिशाली और कुशल भाषा मॉडल (जैसे जीपीटी–4ओ (GPT&4o) या क्लौड–3.5 (Claude 3-5 Sonnet)) को 'जज' (Judge) की भूमिका सौंपते हैं।

- इनपुट डेटा : जज मॉडल को तीन चीजें दी जाती हैं – यूजर का मूल प्रश्न (Prompt), एआई ऐप का जवाब (Response), और मूल्यांकन के नियम (Evaluation Rubric)।
- निर्णय प्रक्रिया : जज मॉडल इन नियमों के आधार पर जवाब का विश्लेषण करता है।
- आउटपुट : यह न केवल 0 से 100 या 1 से 5 के पैमाने पर स्कोर देता है, बल्कि उस स्कोर के पीछे कातार्किक कारण (Reasoning) भी लिख कर देता है।

2. मूल्यांकन के मुख्य मापदंड (Key Criteria)

एक एल.एल.एम. जज मुख्य रूप से निम्नलिखित पैमानों पर किसी दूसरे एआई के जवाबों को परखता है :

- तथ्यात्मक सटीकता (Faithfulness/Correctness) : क्या जवाब में दी गई जानकारी सच है या एआई अपनी तरफ से मनगढ़ंत बातें (Hallucinations) लिख रहा है?
- प्रासंगिकता (Relevance) : क्या दिया गया उत्तर पूछे गए प्रश्न से मेल खाता है?
- टोन और शैली (Tone & Coherence) : क्या बातचीत का लहजा दोस्ताना, पेशेवर और सुसंगत है?

3. इसके उपयोग के प्रकार (Types of Evaluation)

उद्योग में मुख्य रूप से तीन तरीकों से एलएलएम जज का उपयोग किया जाता है–

- सिंगल पॉइंट ग्रेडिंग (Direct Assessment) : इसमें जज अकेले एक प्रतिक्रिया को देखता है और उसे सीधे स्कोर या ग्रेड देता है ।
- पेयरवाइज तुलना (Pairwise Comparison) : इसमें दो अलग–अलग एआई मॉडल के जवाब जज के सामने रखे जाते हैं और जज को बताना होता है कि दोनों में से कौन सा उत्तर बेहतर है।

- संदर्भ–आधारित मूल्यांकन (Reference & based) : इसमें जज को एक सही जवाब (Ground Truth) दिया जाता है, जिससे तुलना करके वह एआई के आउटपुट को मापता है।

4. एल.एल.एम. ऐज अ जज (LLM & as & a & Judge) के फायदे (Benefits)

असीमित स्केलेबिलिटी (Scalability) : जहाँ इंसान दिन में केवल कुछ सौ जवाबों को ही पढ़ सकते हैं, वहीं एआई जज मिनटों में हजारों आउटपुट की समीक्षा कर सकता है।

कम लागत (Cost & Effective) : इंसानी समीक्षकों की तुलना में यह तकनीक बहुत कम खर्च में बड़ी मूल्यांकन पाइपलाइन खड़ी कर देती है।

बारीकियों की समझ (Semantic Understanding) : यह पारंपरिक कोड–बेस्ड एल्गोरिदम (जैसे शब्द–से–शब्द मिलान) के मुकाबले भाषा के संदर्भ, भावनाओं और तर्कों को बेहतर समझता है।

5. चुनौतियाँ और सीमाएँ (Limitations & Challenges) : कमाल की तकनीक होने के बावजूद, एलएलएम जज पूरी तरह दोषमुक्त नहीं है :

- आत्म–पूर्वाग्रह (Self & bias) : कुछ रिसर्च में पाया गया है कि जज मॉडल अक्सर अपने ही द्वारा बनाए गए या अपनी कंपनी के आउटपुट को ज्यादा पसंद करते हैं।
- क्रम पूर्वाग्रह (Position Bias) : पेयरवाइज तुलना में, मॉडल अक्सर उस विकल्प को बेहतर बताते हैं जो उन्हें पहले (First Position) दिखाया जाता है।
- असंगति (Inconsistency) : चूंकि एलएलएम संभाव्यता (Probabilistic) पर काम करते हैं, इसलिए एक ही इनपुट पर अलग–अलग समय पर थोड़ा भिन्न परिणाम दे सकते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion) :

आज के जनरेटिव एआई युग में एल.एल.एम. ऐज अ जज (LLM & as & a & Judge) एआई डेवेलपर्स के लिए एक अनिवार्य टूल बन चुका है। हालांकि यह इंसानी सूझबूझ को पूरी तरह से विस्थापित नहीं कर सकता, लेकिन अच्छी प्रॉम्प्ट इंजीनियरिंग और सटीक नियमों (Rubrics) के साथ कैलिब्रेट करने पर यह एआई प्रोडक्ट्स को सुरक्षित और सटीक बनाने का सबसे तेज रास्ता है।

ONOS & APC : ओपन साइंस में भारत की लंबी छलांग

डा. नवीन उपाध्याय
उप–पुस्तकालयाध्यक्ष
श्रीनिवास देशपांडे पुस्तकालय

वैज्ञानिक और सामाजिक शोध मानव सभ्यता के उत्तरोत्तर विकास और समृद्धि का आधार है। यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें शोध परिणामों को लेखों के रूप में प्रकाशित किया जाता है और उसे पढ़कर शोधार्थी नए शोधों को अंजाम देते हैं परंतु वर्तमान में शोधपत्रों के प्रकाशन का मॉडल एक बड़े वैज्ञानिक व शोधार्थी वर्ग को नए शोध परिणामों को पढ़ने से रोकता है, जो अंततः उत्तरोत्तर विकास और समृद्धि की गति को धीमा करता है।

वैज्ञानिक शोध प्रकाशन का बदलता परिदृश्य

सब्स्क्रिप्शन मॉडल बदलते परिदृश्य में पुस्तकालय और शोधार्थियों की अपेक्षाओं को पूर्ण करने में नाकाम रहा है। यही कारण है कि ओपन एक्सेस प्रकाशन को पुस्तकालय, वैज्ञानिक समूहों, संस्थानों और यहाँ तक कि प्रकाशकों का भी पूर्ण सहयोग व समर्थन मिल रहा है। कोई प्रकाशन ओपन एक्सेस तब होता है जब उसे पढ़ने, डाउनलोड करने में कोई वित्तीय, कानूनी या तकनीकी रुकावट न हो यानी कोई भी इसमें लाइसेंस के हिसाब से उसे पढ़, डाउनलोड, कॉपी, डिस्ट्रिब्यूट, प्रिंट और दोबारा इस्तेमाल कर सकता है। 2002 में स्थापित क्रिएटिव कॉमन लाइसेंस (CC) का उपयोग ओपन एक्सेस प्रकाशन के लिए किया जाता है।

ओपन एक्सेस प्रकाशन और उसके फायदे

प्रचलित प्रकाशन माध्यम की तुलना में ओपन एक्सेस प्रकाशन दुनिया भर के शोधार्थियों, पेशेवरों, तकनीशियनों, नीति निर्माताओं और आम जनता तक तेजी से पहुँच जाता है। जिससे शोध को पढ़ने वालों का दायरा बढ़ता है या शोध पत्र को साइटेशन मिलने की संभावना 30 से 40% ज्यादा हो जाती है। इसके साथ–साथ लेखकों के अंतरराष्ट्रीय सहयोग, फंडिंग की संभावना और अपने पास कॉपीराइट रखने का मौका भी मिल जाता है। पाठकों को बिना अवरोध पढ़ने की सुविधा, टेक्स्ट माइनिंग की सुविधा तथा पुस्तकालयों को पत्रिकाओं के बढ़ते मूल्य से छुटकारा मिल जाता है। सरकार व अनुदान देने वाली संस्थाओं को अपने निवेश पर हुए शोध परिणामों को जनता तक आसानी से पहुँचाने में मदद मिल जाती है जो कि अनुदान का मुख्य उद्देश्य होता है।

ओपन एक्सेस के प्रकार

ओपन एक्सेस प्रकाशन दो माध्यमों से किया जा सकता है। प्रथम माध्यम वह है जिसमें आप अपने लेख ओपन प्लेटफॉर्म पर प्रकाशित करते हैं। इसके अंतर्गत गोल्ड ओपन एक्सेस या डायमंड ओपन एक्सेस आते हैं। गोल्ड ओपन एक्सेस के सभी लेख सबके लिए उपलब्ध होते हैं व इसका खर्च APC (आर्टिकल प्रोसेसिंग चार्ज) के माध्यम से पूरा किया जाता है जबकि डायमंड ओपन एक्सेस जर्नल को आमतौर पर लाइब्रेरी सब्सिडी मॉडल या संस्थानों या सामाजिक संस्थानों से अनुदान मिलता है जिससेवो ।च्छ की भरपाई करते हैं। दूसरा माध्यम वह है जिसमें आप सब्सक्रिप्शन आधारित प्लेटफॉर्म पर प्रकाशित करते हैं। हाइब्रिड मॉडल में APC भुगतान करके आप अपने लेख को ओपन एक्सेस की सुविधा दे सकते हैं। इसके अलावा संस्थागत रिपॉजिटरी के माध्यम से एम्बार्गोपीरियड (6–12 महीने) के बाद स्वीकृत मैन्यूस्क्रिप्ट को ओपन एक्सेस सुविधा प्रदान कर सकते हैं।

ओपन एक्सेस साइंस की ओर भारत के बढ़ते कदम

भारत के प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त 2022 को लाल किले के प्राचीर से देश के नाम सम्बोधन में अमृत काल, नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, जय अनुसंधान और एक ऐसे इको सिस्टम बनाने की बात कही थी जिससे 2047 तक विकसित भारत की कल्पना को साकार किया जा सके। इस कड़ी में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा ONOS

& APC की शुरुआत की गई जिसमें अंतर्गत 32 अंतरराष्ट्रीय प्रकाशकों के 13,000 से अधिक पत्रिकाओं तक 7 हजार से अधिक संस्थानों के लगभग 2 करोड़ छात्रों और शोधार्थियों की पहुँच हो गयी है। इसके अलावा, 431 Q1 गोल्ड ओपन एक्सेस जर्नल में बिना APC शुल्क दिए लेख छपवा सकते हैं। ONOS & APC ने छोटे कस्बों से लेकर मेट्रोपॉलिटन सिटी में अवस्थित शिक्षा संस्थानों में कार्य रतशोधार्थियों व विद्यार्थियों के लिए समान संसाधन सुनिश्चित कर दिया है और उनके लिए वरदान साबित हो रहा है जिनमें शोध क्षमता तो थी परंतु शोधपत्रों तक पहुंच न होने से वो शोध कार्य से वंचित थे।

ONOS & APC की पहल

भारत सरकार द्वारा ONOS & APC की केंद्रीकृत व्यवस्था की गई है जिसका मुख्य केंद्र INFLIBNET सेंटर, गांधीनगर, गुजरात को बनाया गया है। वे सभी संस्थान जो ONOS के तहत पंजीकृत हैं उनके नियमित शिक्षक, छात्र, शोधार्थी या प्रधान अन्वेषक APC छूट के लिए योग्य हैं अगर वह शोधलेखों के प्रथम या पत्राचार लेखक हैं।

ONOS & APC की प्रक्रिया

ONOS & APC वेबसाइट पर उपलब्ध 431 पत्रिकाओं में, अगर आपका शोध पत्र स्वीकृत हो गया है और आप वेबसाइट पर उपलब्ध शर्तों को पूरा कर रहे हैं, तो आपका APC शुल्क INFLIBNET सेंटर द्वारा वहन किया जाएगा। इसके लिए लेखकों को सर्वप्रथम ONOS & APC पोर्टल पर खुद को पंजीकृत करना होगा। उपलब्ध प्रपत्रों को पूर्णतः भरकर, सह लेखकों की स्वीकृति लेकर संस्थान के कुल सचिव या मुखिया से सत्यापित कराना होगा कि आप उस संस्थान के बोनाफाइड छात्र, शिक्षक या शोधार्थी हैं। प्रपत्रों को अपलोड करने के बाद आपके संस्थान के ONOS & APC नोडल ऑफिसर (सामान्यतः पुस्तकालयाध्यक्ष) द्वारा सत्यापित किया जाएगा। इसके बाद आपको पुनः निर्देशानुसार प्रकाशक के पोर्टल पर जाकर इनवॉइस जनरेट कर ONOS & APC पोर्टल पर अपलोड करना होगा। इनफ्लिबनेट सेंटर द्वारा प्रकाशक को भुगतान करने के बाद लेखकों को सूचित कर दिया जाएगा और आपका शोध पत्र ओपन एक्सेस हो जाएगा।

ONOS और ONOS & APC का दूरगामी उद्देश्य सिर्फ पत्रिकाओं को पढ़ने कि सुविधा देना नहीं है बल्कि भारत में एक ओपन साइंस इकोसिस्टम की नींव रखना है। इस पहल को एक मददगार फ्रेमवर्क के तौर पर देखा जाना चाहिए, जो एक ऐसे भविष्य के लिए मंच तैयार कर रहा है जहां भारतीय रिसर्च सिर्फ इस्तेमाल ही न हो बल्कि उसे खुले तौर पर बनाया, शेयर और सत्यापित किया जाए।

सारांश :

ONOS & APC, CSIR और DBT की नीतियों और शोध गंगा जैसी पहलों के माध्यम से ओपन साइंस में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। यद्यपि अभी भी वित्तीय बाधाओं, जागरूकता के कमी और नीति कार्यान्वयन की कमजोरी जैसी चुनौतियाँ बनी हुई है। भविष्य में राष्ट्रीय जनादेश, बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, क्षमता निर्माण और प्रौद्योगिकी एकीकरण के माध्यम से इन चुनौतियों का समाधान आवश्यक है। वर्तमान में ONOS & APC के तहत 431 पत्रिकाएं उपलब्ध हैं जिसे ONOS प्रथम फेज के बाद समस्त ONOS प्रकाशक के साथ 'रीड एण्ड पब्लिश' मॉडल अपना कर भारत विश्व के सामने ओपन साइंस के लिए आधारभूत ढांचा तैयार करने का एक मॉडल पेश कर सकता है जैसा ONOS लागू करके किया है।

उपरोक्त बाधाओं को दूर करने और सुझावों को लागू करके भारत वैश्विक ओपन साइंस आंदोलन में एक अग्रणी भूमिका निभा सकता है और अपने अनुसंधान की वैश्विक दृश्यता और प्रभाव को बढ़ा सकता है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), वाराणसी
विषय : 'राजभाषा हिंदी में कामकाज के सवैधानिक दायित्व एवं व्यावहारिक पक्ष'
विशेषज्ञ : श्री पांडेय राकेश, उप निदेशक, विधि एवं न्याय मंत्रालय, नई दिल्ली

संस्थान में दिनांक 05 जून 2026 को 'राजभाषा हिंदी में कामकाज के संवैधानिक दायित्व एवं व्यावहारिक पक्ष' विषयक एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन एबीएलटी : 04 में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्थान के कुलसचिव श्री सुमित कुमार बिस्वास जी ने किया। विषय विशेषज्ञ के रूप में विधि एवं न्याय मंत्रालय, नई दिल्ली से उप निदेशक (राजभाषा) श्री राकेश पांडेय जी उपस्थित थे। स्वागत संबोधन उप कुलसचिव (राजभाषा) डॉ. अमित कुमार सिंह ने किया । श्री पांडेय राकेश कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग के 'सर्टिफाइड ट्रेनर' हैं तथा इन्होंने आईएसटीएम में संकाय के रूप में लोक नीति तथा संगठनात्मक व्यवहार में कई प्रशिक्षण दिए हैं। श्री पांडेय राकेश ने राजभाषा नीति तथा संविधान में राजभाषा बनने का इतिहास, कुछ हिंदी टूल्स की जानकारी, शब्दावली निर्माण तथा उच्च शिक्षा में हिंदी या भारतीय भाषाओं में शिक्षण की सरकारी स्तर पर चल रहीं तैयारियों के बारे में विधिवत बताया ।

कुलसचिव महोदय ने सभी प्रतिभागियों को बताया कि रोजमर्रा के कार्यालयी कार्यों के साथ बीच–बीच में इस तरह के प्रशिक्षण आपके लिए अत्यंत लाभकारी होंगे। मेरे सामने काफी फाइलें हिंदी में ही आती है और लेखा अनुभाग में भी मैने पत्र हिंदी या द्विभाषी में करने के लिए प्रोत्साहित किया है। वहीं कार्यक्रम का संचालन कर रहे हिंदी अनुवादक श्री शशांक पाठक ने बताया कि कुलसचिव महोदय के दिशा–निर्देशन में संस्थान में हिंदी में काफी काम हो रहे हैं। पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है तथा वेबसाइट भी हिंदी में उपलब्ध हो गया है। कुछ गैर शैक्षणिक कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए नियम 8 (4) के तहत व्यक्तिशः आदेश भी जारी हुए हैं।

कार्यशाला में कुल 50 कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की तथा धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यशाला का समापन हुआ। इस अवसर पर कुलसचिव महोदय ने संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अभ्युदय' विशेषज्ञ महोदय को भेंट की।

आभार

काश्यां हि काश्यते काशी काशी सर्वप्रकाशिका
सा काशी विदिता येन तेन प्राप्ता हि काशिका

काशी ज्ञान, प्रकाश और आत्मबोध की नगरी है। इसी ज्ञान, प्रकाश और आत्मबोध को संस्थान परिवार ने 'अभ्युदय' पत्रिका में सिंचित किया है। संस्थान के निदेशक महोदय को विशेष आभार, जिन्होंने पत्रिका के मजमून को तैयार करने में हमें मार्गदर्शन प्रदान किया है। पत्रिका के संपादक मंडल को साधुवाद और उन सभी लोगों को आभार जिनके योगदान से यह अप्रतिम पत्रिका आज हमारे समक्ष प्रस्तुत है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए अत्यंत रुचिकर होगी ।

शशांक पाठक
संयोजक (पत्रिका)